समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 जुलाई 2019

वर्ष : 32, अंक : 02

प्रकाशन स्थल : शांतिकुंज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 12 जुलाई 2019

वार्षिक चंदा : ₹ 60/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-

प्रति अंक : ₹ 3/-

E-mail: news.shantikunj@gmail.com RNI-NO.38653/ 80 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2018-20

2 **सम्पादकीय**
चान्द्रायण व्रत-तप-कल्प के अनुशासन-अनुबन्ध समझें-अपनायें

3 **वृक्षारोपण मास पर मार्गदर्शन**

आध्यात्मिक ऊर्जा केन्द्रों की सफाई
माउण्ट केदार पर लहराया देसंविवि का ध्वज 3

देसंविवि के प्रतिकुलपति की आईसीसीएस-2019, सिंगापुर में भागीदारी
प्रिंस गाज़ी से चर्चा 7

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
योग दु:खनाशक है, उसे अपना मित्र बना लो 8

प्रचण्ड परिवर्तन का उद्घोष

मलय-मरुत हो बंद,
बवंडर के प्रचंड झोंके आयें।
शांत हिमालय फटे,
शिलायें उड़ें, चूर हो टकरायें।।
फट जावे भूतल का पर्दा,
उसमें विश्व समा जाये।
लड़ें दिशाएँ, उलटें रवि, शशि,
शून्य, शून्य ही रह जावें।।
परिवर्तन युग आवे,
बहिरे सुनें, आँख अंधे खोलें।
सोने वाले उठें ! सिपाही जागें !
सावधान हो लें।।

• परम पूज्य गुरुदेव, सन् 1935

यह सौभाग्य दुर्लभ है, हम निरर्थक न गँवा दें

प. पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की आत्मकथा 'हमारी वसीयत और विरासत' के अंतिम पृष्ठों पर प्रकाशित (सम्पादित) उनका संदेश पढ़ें

हमारे मधुर हार्दिक सम्बन्ध

हमें अनेक जन्मों का स्मरण है, लोगों को नहीं। जिनके साथ पूर्व जन्मों में सघन सम्बन्ध रहे हैं उन्हें संयोगवश या प्रयत्नपूर्वक हमने परिजनों के रूप में एकत्रित कर लिया है और वे जिस-तिस कारण हमारे इर्द-गिर्द जमा हो गये है। इन्हें अखण्ड ज्योति अपने आंचल में समेट-बटोर रही है।

बच्चों और अभिभावकों के बीच जो सहज वात्सल्य भरा आदान-प्रदान रहता है वह भी चलता रहा है। बच्चे सहज स्वभाव अभिभावकों से कुछ चाहते रहते हैं। भले ही उसे मुँह खोलकर माँगें अथवा भावभंगिमा से प्रकट करते रहें। बच्चों की आकांक्षा बढ़ी-चढ़ी होती है। भले ही वह उपयोगी हो या अनुपयोगी, आवश्यक हो या अनावश्यक। दे दिलाकर ही उन्हें चुपाया जाता है। इतनी समझ होती नहीं कि पैसा व्यर्थ जाने और वस्तु किसी काम न आने का तर्क उसके गले उतारा जा सके। बच्चों और अभिभावकों के बीच यह दुलारभरी खींचतान तब तक चलती रहती है जब तक वे परिपक्व बुद्धि के नहीं हो जाते और उपयोगिता-अनुपयोगिता का अन्तर नहीं समझने लगते। हमारे साथ एक रिश्ता परिजनों का यह भी चलता रहा है।

याचक और दानी का रिश्ता दूसरा है। पर बच्चों और अभिभावकों के बीच यह बात लागू नहीं होती। बछड़ा दूध न पिये तो गाय का बुरा हाल होता है। मात्र गाय ही बछड़े को नहीं देती, बछड़ा भी गाय को कुछ देता है। यदि ऐसा न होता तो कोई अभिभावक बच्चे जनने और उनके लालन-पालन में समय लगाने, पैसा खर्च करने का झंझट मोल न लेते।

कहने को गायत्री परिवार, प्रज्ञा परिवार आदि नाम रखे गये हैं और उनकी सदस्यता का रजिस्टर तथा समयदान, अंशदान का अनुबन्ध भी है। पर वास्तविकता दूसरी ही है, जिसे हम सब भली-भाँति अनुभव करते हैं। वह है जन्म-जन्मान्तरों से संग्रहीत आत्मीयता। जिसके पीछे जुड़ी हुई अनेकानेक गुदगुदी उत्पन्न करने वाली घटनाएँ हमें स्मरण हैं। परिजन उन्हें स्मरण न रख सके होंगे, फिर भी वे विश्वास करते हैं कि परस्पर आत्मीयता की कोई ऐसी मजबूत डोरी बँधी है जो कई बार तो हिलाकर रख देती है। एक-दूसरे के निकट आने, परस्पर कुछ अधिक कर गुज़रने के लिए आतुर होते हैं। यह कल्पना नहीं, वास्तविकता है, जिसकी दोनों पक्षों को निरन्तर अथवा समय-समय पर अनुभूति होती रहती है।

संवेदना जगायें, आत्मीयता पायें

बच्चों के, प्रज्ञा परिजनों के सम्बन्ध में चलते-चलाते हमारा इतना ही आश्वासन है कि वे यदि अपने भाव सम्वेदना क्षेत्र को थोड़ा और परिष्कृत कर लें तो निकटता अब की अपेक्षा भी अधिक गहरी अनुभव करने लगेंगे। कारण कि हमारा सूक्ष्म शरीर सन् 2000 तक और भी अधिक प्रखर होकर जियेगा। यहाँ जिसकी आवश्यकता होगी, बिना विलम्ब लगाये पहुँचेगा। इतना ही नहीं, स्नेह-सहयोग, परामर्श-मार्गदर्शन जैसे प्रयोजनों की पूर्ति भी करता रहेगा। कठिनाइयों में सहायता करने और बालकों को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने की हमारी प्रकृति में राई-रत्ती भी अन्तर नहीं होने जा रहा है। वह लाभ पहले की अपेक्षा और भी अधिक मिलता रह सकता है।

हमारी अपेक्षा-आकांक्षाओं को भुला न दिया जाय

बच्चे बड़ों से कुछ चाहते हैं, सो ठीक है पर बड़े बदले में कुछ न चाहते हों, ऐसी बात भी नहीं। हमारी अपेक्षाएँ भी ऐसी ही हैं। गोवर्धन उठाने वाले ने अपने अनगढ़ ग्वाल-बालों के सहारे ही गोवर्धन उठाकर दिखाया था। हनुमान की बात किसी ने नहीं सुनी तो अपने सहचर रीछ-वानरों को ही समेट लाये। नव-निर्माण के कन्धे पर लदे उत्तरदायित्व को वहन करने में हम अकेले समर्थ नहीं हो सकते थे। यह मिलजुलकर सम्पन्न हो सकने वाला कार्य था। सो समझदारों में से कोई हाथ न लगा तो अपने इसी बाल-परिवार को लेकर जुट पड़े और जो कुछ, जितना कुछ सम्भव हो सका, करते रहे। अब तक की प्रगति का यही सार-संक्षेप है।

बात अगले दिनों की आती है। हमें अपने बच्चों के लिए क्या करना चाहिए, इस कर्त्तव्य का, उत्तरदायित्व का सदा ध्यान रहा है और जब तक चेतना का अस्तित्व है, उसका स्मरण बना भी रहेगा। इस सम्बन्ध में स्मरण दिलाने योग्य बात एक ही है कि हमारी आकांक्षा और आवश्यकता को भुला न दिया जाय। समय विकट है। इसमें प्रत्येक परिजन का समयदान और अंशदान हमें चाहिए। जितना मिलता रहा है उससे भी अधिक मात्रा में, क्योंकि जो करना है उसके लिए तत्काल क़दम उठाने हैं। सो भी बड़े कामों के लिए बड़े-बड़े लोग चाहिए, बड़े साधन भी। हमारे परिवार का हर व्यक्ति बड़ा है। छोटेपन का तो उसने मुखौटा भर पहन रखा है। उतारने भर की देर है कि उसका असली चेहरा दृष्टिगोचर होगा।

हमारे जीवन से कुछ सीखें

हमारा परिजनों से यही अनुरोध है कि हमारी जीवनचर्या को घटना-क्रम की दृष्टि से नहीं, वरन् इस पर्यवेक्षण की दृष्टि से पढ़ा जाना चाहिए कि उसमें दैवी अनुग्रह के अवतरण होने से 'साधना से सिद्धि' वाला प्रसंग जुड़ा या नहीं। इसी प्रकार यह भी दृष्टव्य है कि दूसरों के अवलम्बन योग्य आध्यात्मिकता का प्रस्तुतीकरण करते हुए हमारे कदम ऋषि परम्परा अपनाने के लिए बढ़े या नहीं? जिसे जितनी यथार्थता मिले वह उतनी ही मात्रा में यह अनुमान लगाये कि अध्यात्म विज्ञान का वास्तविक स्वरूप यही है। आन्तरिक पवित्रता और बहिरंग की प्रखरता में जो जितना आदर्शवादी समन्वय कर सकेगा वह उन विभूतियों से लाभान्वित होगा जो अध्यात्म तत्त्वज्ञान एवं क्रिया-विज्ञान के साथ जोड़ी और बताई गई हैं।

अपने अनन्य आत्मीय प्रज्ञा परिजनों में से प्रत्येक के नाम हमारी यही वसीयत और विरासत है कि हमारे जीवन से कुछ सीखें। कदमों की यथार्थता खोजें। सफलता जाँचें और जिससे जितना बन पड़े अनुकरण का, अनुगमन का प्रयास करें। यह नफ़े का सौदा है, घाटे का नहीं।

ऋषिचेतना का प्रभाव और जाग्रत् आत्माओं की वैश्विक हलचल

अपनी योजना विश्वव्यापी है। उसकी परिधि में अकेला भारत ही नहीं, समूचा संसार आता है। अस्तु प्रयत्न यह है कि विचार क्रांति की प्रक्रिया को परिस्थितियों के अनुरूप व्यापक बनाने के लिए जाग्रत् आत्माओं का समुदाय हर क्षेत्र में, हर देश में मिले। कार्य पद्धतियाँ क्षेत्रीय वातावरण के अनुरूप बनती रहेंगी, पर लक्ष्य एक ही रहेगा-ब्रेन वॉशिंग, विचार परिवर्तन, प्रज्ञा अभियान।

हम अकेले ही उगे, बढ़े और गलकर समाप्त हो गये तो यह एक दुर्घटना होगी। एक से हजार वाली बात सोची और कही जा रही है तो उसकी परिणति भी वैसी ही होनी चाहिए। हम सब तीर की तरह सनसनाते हुए ही लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयत्न करेंगे। जिनमें इस प्रकार की जीवट होगी, वे अनुभव करेंगे कि उन्हें कोई कोंचता, कुरेदता, झकझोरता, घसीटता और बाध्य करता है।

यों ऐसे लोग समय की पुकार पर अन्तरात्मा की प्रेरणा से भी जाग पड़ते हैं। ब्रह्म मुहूर्त में मुर्गा तक बाँग लगाने के लिए उठ खड़ा होता है तो कोई कारण नहीं कि जिनमें प्राण-चेतना विद्यमान है, वे महाकाल का आमंत्रण न सुनें और पेट-प्रजनन की आड़ में व्यस्तता और अभावग्रस्तता की ही बहानेबाज़ी करते रहें। समय की पुकार और हमारी मनुहार का संयुक्त प्रभाव कुछ भी न पड़े, ऐसा हो ही नहीं सकता। विश्वास किया गया है कि इस स्तर का एक शानदार वर्ग उभरकर ऊपर आयेगा और सामने ही कटिबद्ध खड़ा दृष्टिगोचर होगा।

हमारे परिवार का हर व्यक्ति बड़ा है। छोटेपन का तो उसने मुखौटा भर पहन रखा है।
उतारने भर की देर है कि उसका असली चेहरा दृष्टिगोचर होगा। - परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी

श्रावणमास में सामूहिक चान्द्रायण साधना के भागीदार साधक ध्यान दें

चान्द्रायण व्रत-तप-कल्प के अनुशासन-अनुबन्ध समझें-अपनायें

यह प्रसन्नता का विषय है कि युग निर्माण अभियान से जुड़े परिजनों में चान्द्रायण कल्प साधना के प्रति रुचि बढ़ रही है। युग परिवर्तन व्यक्तियों और व्यक्ति-समूहों के जीवन में घुसे विकारों को निकाल फेंकने और उनमें सन्निहित दिव्य क्षमताओं के विकास और सुनियोजन से ही संभव होगा। चान्द्रायण साधना इसी उद्देश्य से की या कराई जाती है। ऋषिसत्ता की अन्तरंग प्रेरणाओं से प्रभावित बड़ी संख्या में युगसाधक चान्द्रायण साधना में प्रवृत्त हो रहे हैं, यह शुभ चिन्ह है। कुछ वर्षों से सूचना प्रौद्योगिकी (इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी) के माध्यम से एकजुट होकर श्रावण मास में सामूहिक चान्द्रायण साधना करने का प्रयोग भी चल पड़ा है। उसकी लोकप्रियता क्रमशः बढ़ रही है। उक्त साधना क्रम में व्यक्तिगत अथवा सामूहिक रूप से जुड़े साधकों को पूज्य गुरुदेव के विचारों-प्रयोगों से लाभान्वित करने के लिए यह आलेख प्रस्तुत किया जा रहा है।

चान्द्रायण कल्प

जीवन को दोषमुक्त, परिष्कृत करके उसमें सन्निहित दिव्य क्षमताओं को जाग्रत्-प्रयुक्त करने के लिए अनेक साधनाएँ अपनायी जाती हैं। कल्प साधनाएँ उनमें विशेष स्थान रखती हैं। कल्प साधना के अन्तर्गत एक निश्चित अवधि में व्यापक परिवर्तन संकल्पपूर्वक लाने के प्रयोग किए-कराए जाते हैं।

कायाकल्प के विभिन्न प्रयोग आयुर्वेद में वर्णित हैं। काल प्रभाव से जब शरीर में स्वस्थ कोशिकाएँ बनने का क्रम धीमा पड़ जाता है, काया को रोग और कमजोरी के आघात झेलने पड़ जाते हैं, तब कायाकल्प चिकित्सा में शरीरगत मल-विक्षेपों को बाहर निकालकर ओषधियों और योग साधनाओं के द्वारा स्वस्थ-सबल कोशिकाएँ बनने का क्रम पुनः जीवन्त बनाया जाता है। शरीर में फिर से युवाओं जैसी ऊर्जा उभरने लगती है।

चान्द्रायण साधना में जीवन कल्प का लक्ष्य सामने रखा जाता है। शरीर के साथ आध्यात्मिक भावकल्प भी जुड़ा रहता है। युगऋषि ने अपनी पुस्तक 'चान्द्रायण कल्प साधना' में उक्त तथ्य को भली प्रकार समझाया है। मनुष्य के लिए दुःख-कष्ट के कारण केवल शारीरिक दोष ही नहीं होते, भावों और विचारों के दोष पहले भ्रष्ट चिन्तन का रूप लेते हैं और फिर दुष्ट आचरण बनकर ऐसी दुष्प्रवृत्तियों को विकसित कर देते हैं जो आधि-व्याधि, विपत्ति, हानि, अपयश के रूप में पीड़ा-पतन से जीवन को आच्छादित कर देते हैं।

जीवन कल्प में कायिक के साथ मानसिक और आत्मिक परिशोधन और परिपोषण के क्रम जुड़े होते हैं। चान्द्रायण साधना में इन दोनों प्रक्रियाओं को पूरी तत्परता और कुशलता के साथ शामिल रखना होता है। गुरुदेव ने लिखा है :-''*चान्द्रायण साधना को 'व्रत', 'तप' एवं 'कल्प' के नाम से भी जाना जाता है।*''

'व्रत' अर्थात् संयम, अनुशासन, निर्धारण एवं परिपालन।

'तप' अर्थात् संचित कुसंस्कारों से संघर्ष और शालीनता के अवधारण का अभ्यास, पुरुषार्थ।

'कल्प' अर्थात् पिछली हेय स्थिति को उलट कर उसके स्थान पर उत्कृष्टता का प्रतिष्ठापन।

इन तीनों को कायिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक स्तरों पर प्रयुक्त करना जरूरी होता है, तभी इनका समुचित लाभ मिलता है।

प्रारंभ प्रायश्चित्त से

कल्प साधना का प्रारंभ प्रायश्चित्य से किया जाता है। जीवन का कल्प करना है, उसे हेय स्थिति से निकाल कर उत्कृष्ट बनाना है तो प्रायश्चित्त विधान का सहारा लेना जरूरी हो जाता है। धुलाई के बिना रंगाई ठीक नहीं हो सकती। ढलाई के पहले गलाई करनी पड़ती है। कायाकल्प में काया में नयी ऊर्जा का संचार करने के लिए विभिन्न क्रियाओं से शरीर का शोधन करना पड़ता है। पेट में विकार हो, पाचन तंत्र ठीक काम न करे, तो कल्प के क्रम में दिए जाने वाले ओषधियुक्त पोषक आहार का लाभ कहाँ मिलेगा। इसी तरह जीवनकल्प में भी हीन प्रवृत्तियों के निष्कासन के साथ ही योग प्रवृत्तियों को जाग्रत् किया जाता है।

प्रायश्चित्त विधान के तीन पक्ष युगऋषि ने स्पष्ट किए हैं। **एक** व्रत-उपवास जैसी तितिक्षाएँ। **दो** संचित कुसंस्कारों को उखाड़ने और उनके स्थान पर उच्चस्तरीय शालीनता को स्थापित करने का अन्तर्मुखी पुरुषार्थ। **तीन** खोदी गयी खाई पाटने वाली क्षतिपूर्ति के लिए पुण्य-परमार्थ का उदार साहस। इन तीनों के संयुक्त समावेश से ही प्रायश्चित्त की पूर्ण-प्रक्रिया सधती है। मात्र आहार अनुशासन से तो कल्प प्रक्रिया का एक छोटा भाग ही सधता है।

सभी पक्ष समझें-साधें

चान्द्रायण कल्प के भी युगऋषि ने तीन पक्ष कहे हैं। एक संयम साधना, दो प्रज्ञा उपासना और तीन भविष्य निर्धारण की साधना। यह भी प्रायश्चित्त विधान के तीन पक्षों के अनुसार ही हैं। इसीलिए कई विचारक इसे चान्द्रायण प्रायश्चित्त भी कहते हैं। अब इनके संतुलित व्यावहारिक स्वरूप पर चर्चा करते हैं।

1. संयम साधना : इसमें उपवास की प्रक्रिया के साथ चारों संयमों (इंद्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम, विचार संयम) की साधना की जाती है।

उपवास का क्रम चान्द्रायण साधना में निश्चित है। पूर्ण चान्द्रायण एक माह तक चलाया जाता है। आहार की मात्रा चन्द्रमा की कलाओं के अनुसार घटाई एवं बढ़ाई जाती है। इसके दो स्तर के प्रयोग होते हैं।

(1) मृदु : मृदु चान्द्रायण पूर्णिमा से पूर्णिमा तक किया जाता है। पूर्णिमा को दिन में एक बार पूर्ण आहार लिया जाता है। क्रमशः घटाते हुए अमावस्या को निराहार रहा जाता है। प्रतिपदा से क्रमशः आहार बढ़ाते हुए पूर्णिमा तक पूर्ण आहार पर पहुँचा जाता है। इसे शास्त्रों में पिपीलिका मध्य चान्द्रायण भी कहते हैं।

(2) कृच्छ : कृच्छ चान्द्रायण अमावस्या से अमावस्या तक किया जाता है। शून्य-निराहार से प्रारम्भ करके क्रमशः बढ़ाते हुए पूर्णिमा को पूर्ण आहार लिया जाता है। फिर क्रमशः घटाते हुए अमावस्या को निराहार रहा जाता है। इसे यवमध्य चान्द्रायण भी कहते हैं।

मृदु चान्द्रायण अपेक्षाकृत सहज होता है। पूर्ण आहार से प्रारम्भ करके उसे पूर्ण आहार पर ही समाप्त किया जाता है। इसलिए व्रत समाप्त होने पर सामान्य आहार पर आने में कोई कठिनाई नहीं होती। कृच्छ चान्द्रायण में समापन शून्य आहार पर होता है। व्रत पूर्ण होने पर सामान्य आहार तक पहुँचने के लिए सावधानी बरतनी पड़ती है। एक दिन रसाहार, फिर पेय पदार्थ, फिर शाक-फल लेते हुए धीरे-धीरे स्वाभाविक आहार तक पहुँचना पड़ता है। अन्यथा पेट पर एकदम बोझ पड़ने से काफी हानि होने की संभावना रहती है।

प्राचीन परम्परा के अनुसार पूर्ण आहार में 15 पिण्ड लिए जाते हैं। पिण्ड का या ग्रास का आकार इतना होना चाहिए कि उसे मुँह में डालने के बाद मुँह बन्द किया जा सके। चन्द्रमा की कलाओं के अनुसार एक-एक पिण्ड घटाने या बढ़ाने का क्रम चलाया जाता था।

युगऋषि ने इसे अधिक विधिसम्मत एवं व्यावहारिक बना दिया है। साधक एक समय में जितना आहार सहजता से ले सकता है, उसे नाप या तौल लिया जाय। उसका चौदहवाँ भाग रोज कम करते हुए अमावस्या को निराहार रहा जाता है। प्रतिपदा को भी निराहार रहते हैं। द्वितीया से एक-एक अंश बढ़ाते हुए पूर्णिमा को पुनः पूर्णाहार पर पहुँच जाते हैं।

इसमें युगऋषि ने यह छूट दी है कि चाय, छाछ, दूध जैसे पेय पदार्थों की सीमित मात्रा निश्चित कर ली जाय। उन्हें घटाया या बढ़ाया न जाय। केवल आहार को ही घटाया-बढ़ाया जाय। नये साधकों को यह भी छूट दी जाती है कि रोटी, चावल, दलिया आदि अन्न की मात्रा घटाई-बढ़ाई जाय। उसके साथ ली जाने वाली सब्जी की मात्रा भी स्थिर रखी जाय।

यति चान्द्रायण : इसमें प्रतिदिन आहार घटाने-बढ़ाने की जगह अधिकतम और न्यूनतम आहार का औसत निकाल लिया जाय। पूर्ण आहार के चौदह अंश बनाये जाते हैं। उसका आधा 7 या 8 अंश प्रतिदिन एक समय लिए जायें।

शिशु चान्द्रायण : आठ अंश का आधा 4 अंश सुबह और 4 अंश शाम को लेते रहा जाय।

अर्ध चान्द्रायण : मृदु अर्ध चान्द्रायण अमावस्या से पूर्णिमा तक किया जा सकता है। अमावस्या को निराहार रहा जाय। प्रतिपदा से एक-एक अंश बढ़ाते हुए पूर्णिमा पर पूर्ण आहार तक पहुँचा जाय।

यह उपवास क्रम का अनुशासन हुआ। कल्प साधना में अन्न सुपाच्य और सात्विक, ईमानदारी की कमाई का होना चाहिए। एक ही अन्न तथा एक ही लगावन (सब्जी आदि) रहे तो शरीर शोधन की प्रक्रिया अधिक अच्छे ढंग से पूरी होती है। यह चान्द्रायण व्रत साधना का सबसे सुगम पक्ष है। इसके साथ चारों संयमों का निर्धारण भी रहे।

2. प्रज्ञा उपासना : इसमें गायत्री उपासना और स्वाध्याय, मनन, चिन्तन शामिल हैं। इसमें जप संख्या साधकगण अपने ढंग से निर्धारित कर सकते हैं। पूर्ण चान्द्रायण के क्रम में एक माह में सवालक्ष जप करना हो तो 42 माला नित्य जापी जाती हैं। चौबीस-चौबीस हजार के तीन अनुष्ठान पूरे करने हों तो 25 माला नित्य से पूर्ति हो जाती है। यदि दो ही अनुष्ठान करने हों तो 16 माला प्रतिदिन पर्याप्त हैं।

जप संख्या पूरी करना सबसे सुगम कार्य है। किन्तु अंतःकरण में दिव्य भावों को संचरित करने की साधना करना भी जरूरी है। अन्यथा मशीन की तरह केवल जप संख्या पूरी करने से बहुत सीमित लाभ ही मिल सकता है। इस सम्बन्ध में युगऋषि ने लिखा है-

''*जप के साथ उदीयमान सूर्य का ध्यान किया जाय। अनुभव किया जाय कि गायत्री के प्राण, सविता देवता का दिव्य आलोक जीवन सत्ता के कण-कण में प्रवेश करके तीन अनुदान दे रहा है। स्थूल शरीर में सत्कर्म, सूक्ष्म शरीर में सद्ज्ञान तथा कारण शरीर में सद्भाव। इन तीनों को क्रमशः निष्ठा, प्रज्ञा और श्रद्धा भी कहते हैं। कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तियोग के अन्तर्गत इन्हीं तीनों अनुदानों का विवेचन किया जाता है।*''

प्रज्ञा उपासना का एक और पक्ष है इसके अन्तर्गत चित्त के कुसंस्करों को उखाड़ने तथा सुसंस्कारों को स्थापित करने की अन्तर्मुखी साधना करनी पड़ती है। इसमें अपने दोषों को स्वीकार करना, उन्हें गुरु के सामने प्रकट करना, उन्हें पुनः न दोहराने का संकल्प लेना होता है। गुरुदेव अपनी देखरेख में चलने वाले साधना क्रम में यह प्रक्रिया पूरी करवाते थे। क्षेत्र में यह संभव नहीं। किन्तु गुरुसत्ता को अन्तःचेतना में प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए अपने पूर्व पापकर्मों का विवरण लिखना संभव है। उन्हें उनके सामने रखकर स्वयं को अन्दर से खाली, शान्त अनुभव किया जा सकता है। जिन दुष्प्रवृत्तियों ने उन्हें पैदा किया, उनको निरस्त करके सम्बन्धित सत्प्रवृत्तियों को जीवन में लाने की साधना गुरु निर्देशों के प्रकाश में की जा सकती है।

3. भविष्य निर्धारण : इस सम्बन्ध में गुरुवर ने लिखा है :- ''*भविष्य निर्धारण की आराधना के निमित्त साधना की अवधि में स्वाध्याय, सत्संग तथा अन्तर्मुखी चिन्तन-मनन के चार प्रयोजनों में निरत रहना पड़ता है। नित्यकर्म, उपासना के अतिरिक्त जो भी समय खाली मिले उसमें इन चारों प्रयोजनों में मन को लगाये रखना पड़ता है।*''

इस क्रम में आत्मसमीक्षा, आत्मशोधन, आत्मनिर्माण एवं आत्मविकास संबंधित चिन्तन-मनन की अन्तरंग प्रक्रिया गंभीरतापूर्वक चलाई जाती रहनी चाहिए। इसके लिए एक घंटे का समय तो विशेष रूप से निर्धारित रहना ही चाहिए।

उक्त सभी पक्षों के सुसंयोग से चान्द्रायण साधना का वाञ्छित लाभ मिल पाता है। आहार सम्बन्धी नियमों को निभाने और जप संख्या पूरी करने के साथ उक्त अन्तरंग तप पुरुषार्थ के संयोग से ही कल्प साधना का उद्देश्य पूरा होता है। इस प्रकार संतुलित साधना से काया और अंतःचेतना दोनों के कल्प का लाभ मिल सकता है।

शरीर की प्राकृतिक संरचना ऐसी अद्भुत है कि यदि उस पर असंयमजन्य अस्त-व्यस्तता न लादी जाय तो वह शतायु की न्यूनतम परिधि को पार करके सैकड़ों वर्ष जी सकता है। मरण तो प्रकृति का धर्म है, पर जीर्ण-शीर्ण होकर जीना यह मनुष्य का अपना उपार्जन है। आरंभ से ही सुपथ पर चला जाय तो कहना ही क्या; अन्यथा मध्य काल में रुख़ बदल दिया जाय तो भी ऐसा सुधार हो सकता है जिसे अद्भुत, अप्रत्याशित कहा जा सके।

चेतना तंत्र की संरचना भी ऐसी ही है। ईश्वर का अंश होने के कारण उसमें सभी उच्चस्तरीय विभूतियाँ भरी पड़ी हैं। पिण्ड ब्रह्माण का छोटा रूप है। परमात्मा की छोटी प्रतिकृति आत्मा है। शरीर में वे सभी तत्त्व विद्यमान हैं जो प्रकृति के अन्तराल में बड़े और व्यापक रूप में पाये जाते हैं।

प्रत्येक साधक को गुरुसत्ता की साक्षी में इस दिशा में अपने प्रयास पूरी तत्परता से करने चाहिए। ईमानदार प्रयासों के साथ गुरुसत्ता के अनुदान-आशीर्वाद भी जुड़ जाते हैं। ●

शांतिकुंज की प्रसारण सेवाएँ
Facebook: GayatriPariwaar Twitter: @AWGPharidwar Blog: awgpskj.blogspot.com
Email: awgpemaillist@gmail.com Whattsapp से जुड़ने के लिए अपना नाम 8439014110 या 9258360944 पर व्हॉट्सएप्प कर दें

प्रकृति के प्रति बढ़ती संवेदना और पर्यावरण संरक्षण के लिए हो रहे प्रयास

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता के 450वें वृक्षारोपण सप्ताह पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते रवि शर्मा

450 सप्ताह से चल रहा अथक पुरुषार्थ

कोलकाता। प. बंगाल

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता का 450वाँ रविवारीय वृक्षारोपण 16 जून 2019 को उत्साहभरे वातावरण में टेक्समेको स्टाफ क्लब में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में गायत्री चेतना केन्द्र, गायत्री आश्रम, 32 मदन मित्रा लेन के और पाँच जिलों के युवा भाई-बहिन उपस्थित थे।

दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर गायत्री परिवार यूथ ग्रुप के संयोजक श्री रवि शर्मा ने 7 नवंबर 2010 से आरंभ हुए वृक्षारोपण अभियान की सार-संक्षेप में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इन नौ वर्षों में अब तक 44784 पेड़ लगाये चुके हैं। उन्होंने शाखा के क्रमिक विकास-विस्तार के साथ आरंभ हुए नए-नए अभियानों से भी अवगत कराया। इस शाखा द्वारा वृक्षारोपण के अलावा कई साप्ताहिक कार्यक्रम भी बड़ी कुशलता और सफलता के साथ चलाए जा रहे हैं। वे अभियान हैं-गंगा तटशुद्धि, देवालय शुद्धि, बहिनों के लिए कम्प्यूटर की कक्षाएँ, बहिनों की आत्मसुरक्षा हेतु कुंगफू की कक्षाएँ, कई स्थानों पर बाल संस्कार शालाएँ, सामूहिक गायत्री मंत्र लेखन, विभिन्न जगहों पर बुक स्टॉल लगाना आदि।

- **अब तक लगाये 44784 पेड़,**
- **कई अन्दोलनों को जन्म दिया**

कार्यक्रम का संचालन श्री प्रह्लाद शर्मा ने किया। इस अवसर पर उपस्थित श्रीमती अंजना मेहरिया, श्री भीष्म अग्रवाल, टेक्समेको के अधिकारी श्री राजाराम सिंह, श्रीमती उर्मिला तोषनीवाल, श्री आर एन शर्मा, श्री हरीश तोषनीवाल एवम श्री रासबिहारी राय आदि सभी ने इस सत्कार्य एवं युवाओं का उत्साहवर्धन किया। सर्वश्री राजेश काबरा, अनिल गोयल, सुश्री मीनू सिंह, राजेन्द्र साव, पवन महतो, राजकुमार सिंह, लालजी राम एवं रवि शर्मा प्रमुख सहयोगी थे।

अब्दा जंगल के सिद्ध कुंड की सफाई की

जतारा। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार जतारा के युवाओं ने 23 जून के दिन सफाई अभियान चलाया, जिसमें अब्दा जंगल स्थित सिद्ध कुंड से एक ट्रॉली मिट्टी, पॉलीथिन, पूजा सामग्री आदि गन्दगी निकाल कर सफाई की। सफाई अभियान का समापन गायत्री यज्ञ के साथ हुआ। श्री मदन समेले, जे.पी. नड्डा, डॉ. दयानन्द समेले, अनन्दीलाल, रघुवर जीह, संजीव नामदेव, सुन्दरलाल, पीयूष, शैलेन्द्र, स्वतन्त्र आदि भाइयों ने सफाई में सहयोग दिया।

माउण्ट केदार पर फहराया देश, सेना और देव संस्कृति विश्वविद्यालय का ध्वज

केदार पर्वत के शिखर पर ध्वज फहराता सेना और देसंविवि का दल

पर्वतारोही दल ने आध्यात्मिक ऊर्जा के केन्द्र गोमुख, तपोवन, कीर्ति ग्लेशियर, भोजवासा की सफाई भी की

थल सेना के जवान और देवसंस्कृति विश्वविद्यालय का एक दल करीब 22,500 फीट की ऊँचाई पर स्थित माउण्ट केदार डोम में तिरंगा व देसंविवि का ध्वज फहरा कर लौटा। इस दल ने माइनस 32 डिग्री हाड़ जमा देने वाली ठंड में न केवल कीर्तिमान स्थापित किया, बल्कि गोमुख, तपोवन, कीर्ति ग्लेशियर, भोजवासा आदि आध्यात्मिक ऊर्जा केन्द्रों की सफाई कर देवात्मा हिमालय की स्वच्छता-पवित्रता बनाये रखने का संदेश दिया। दल के सकुशल शांतिकुंज लौटने पर श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल दीदी ने गायत्री मंत्र का उपवस्त्र ओढ़ाकर एवं युगसाहित्य भेंट कर दल के सभी सदस्यों का स्वागत-अभिनंदन किया।

मेजर विकास शुक्ला के नेतृत्व में 24 सदस्यीय यह दल 19 मई को युगतीर्थ शांतिकुंज की दिव्य चेतना एवं प्रेरणा को हृदयंगम करते हुए रवाना हुआ था। मेजर विकास शुक्ला के अनुसार कार्य

> कार्य आसान नहीं था। सन् 2005 के बाद कोई भी दल माउण्ड केदार डोम पर ध्वज फहराकर सकुशल नहीं लौटा था।
>
> • **मेजर विकास शुक्ला**

आसान नहीं था। सन् 2005 के बाद कोई भी दल माउण्ड केदार डोम पर ध्वज फहराकर सकुशल नहीं लौटा था। उनके दल की यह सफलता असाधारण थी। दल ने माउण्ट केदार पर तिरंगा, देव संस्कृति विवि. एवं सेना के ध्वज फहराने के बाद आध्यात्मिक महत्त्व के केन्द्रों की सफाई की। यह दल अपने साथ पाँच बोरे कचरा अपने कंधे पर ढोकर नीचे लाया।

इस दल के 14 सदस्य माउण्ट केदार डोम तक पहुँचे। इनमें अहमदनगर (महाराष्ट्र), जोधपुर व सूरतगढ़ (राजस्थान) में तैनात सेना के जवान तथा देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के नरेन्द्र गिरि शामिल रहे।

सम्पादकीय

वृक्षारोपण मास, कार्ययोजना

(गुरु पूर्णिमा, 16 जुलाई से श्रावणी 15 अगस्त 2019)

सभी भावनाशील परिजनों से निवेदन है कि हर साल की तरह इस बार भी व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं संगठन के स्तर पर वृक्षारोपण का प्राणवान अभियान चलायें। इस वर्ष 'एक परिजन-एक वृक्ष' का सूत्र अपनाते हुए वृक्षारोपण करें तथा उनके संरक्षण-पोषण की समुचित व्यवस्था बनायें।

ध्यान रहे शास्त्रों में दस सुपुत्रों के पालन-पोषण जितना पुण्य एक वृक्ष के आरोपण-पालन पोषण से प्राप्त होने की बात की गई है। वर्तमान समय में वैज्ञानिक आँकड़ों के आधार पर एक वृक्ष द्वारा दिए जाने वाले अनुदानों को देखकर शास्त्रकारों के कथन की प्रामाणिकता का बोध सहज ही हो जाता है। वृक्षों-वनस्पतियों में ही यह दिव्य क्षमता है कि वे प्रकृति में सहज उपलब्ध प्रकाश, वायु, जल एवं भूमि के सुसंयोग से मनुष्यों, पशु-पक्षियों आदि के लिए पोषण आहार और आरोग्यवर्धक औषधियाँ तैयार कर देते हैं। प्रकृति का संतुलन (इकालॉजिकल बैलेंस) बनाने की उनकी अद्भुत सामर्थ्य सर्वमान्य है ही।

मातु-पिता सा स्नेह भाव ले,
करें पौध का आरोपण।
तरुमित्रों से प्रेम बढ़ायें,
करके सिंचन-संरक्षण।।
उनसे लें अनुदान अपरिमित,
श्रद्धा दें, सम्मान करें।
तरु विष पायी-औगढ़ दानी,
जगती का कल्याण करें।।

तत्काल सक्रिय हों। पौध तैयार करने या उपलब्ध करने पर ध्यान दें। निर्धारित समय पर, निर्धारित स्थलों पर समारोह पूर्वक उनका आरोपण करें। उन्हें कलावा बाँधकर उनके संरक्षण की जिम्मेदारी स्वीकार की जाय। यह जिम्मेदारी स्वयं लें या उनके निकट रहने वाले किन्हीं भावनाशीलों को सौपें। रक्षाबन्धन पर सभी भाई बहन एक दूसरे को पौधे भेंट करें और उनकी स्मृति के रूप में उन्हें लगाने, विकसित करने की भावभरी जिम्मेदारी निभाएँ।

एक विशेष योजना : परम पूज्य गुरुदेव, वन्दनीया माताजी ने सन् 1971 जून में शांतिकुंज युगतीर्थ को अपना आवास बनाया था। तदनुसार वर्ष 2021 इसका स्वर्ण जयन्ती वर्ष होगा। उस वर्ष अन्य प्रेरक कार्यक्रमों के साथ वृक्षारोपण का एक बड़ा लक्ष्य निर्धारित करके उसकी तैयारी अभी से की जाय। उसकी रूपरेखा इस प्रकार है-

• **एक परिजन-एक वृक्ष** का सूत्र अपनाते हुए कम से कम एक करोड़ नये वृक्ष के आरोपण का लक्ष्य निर्धारित किया जाय। इसके लिए हर परिवार, हर संगठित इकाई अपने भावभरे पुरुषार्थ से 'पौध' तैयार करें।

• **माताजी की बाड़ी :-** प्रत्येक देव परिवार इसके लिए खुले स्थान (आंगन, अहाता, छत, छज्जा (बालकोनी) आदि में कम से कम 3 X 3 फिट का स्थान निकालें। उसके मध्य में एक तुलसी का छोटा कमला रखे। उसके आस-पास 4 X 6 इंच के पॉलीथिन बैगों में खाद+मिट्टी भरकर उनमें बीज/पौध लगाएँ। निर्धारित स्थान में आसानी से 50 पौधे रखे जा सकते हैं। उन्हें खाद-पानी देते रहने के साथ ही रिकॉर्डेड गायत्री मन्त्र, ओंकार नाद, संगीत सुनाने का भी क्रम चलाया जाय। 2 वर्ष में वे इतने बड़े हो जायेंगे कि उन्हें सुरक्षित ढंग से आरोपित किया जा सकता है।

• **श्रद्धारोपणी:** शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठों, प्रज्ञा संस्थानों में कम से कम 10 X 10 फिट क्षेत्र में 500 से 1000 पौधे तैयार किये कराये जा सकते हैं।

• **उक्त तैयार पौधों** को शांतिकुंज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में किये जाने वाले वृक्षारोपण अभियान के अन्तर्गत लगाया जाय। उसके लिए अपने क्षेत्र में खाली पड़ी भूमि/टेकरी/पहाड़ी, विद्यालय, नदी-तालाबों के तटीय क्षेत्र में तरुपुत्र योजना के अन्तर्गत समारोह पूर्वक लगाया जाय।

• यह एक सांकेतिक ध्यानाकर्षण सूचना भर है। इस दिशा में वृक्षोरापण, हरीतिमा संवर्धन के अनेक प्रकल्प अपनाये जा सकते हैं। शासकीय योजनाओं में सहयोगी की भूमिका निभाते हुए भी उल्लेखनीय कार्य किये जा सकते हैं।

प्रांतीय कार्यकर्त्ता पर्यावरण संगोष्ठी

महाराष्ट्र के सभी जिलों के 250 कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया

नागपुर। महाराष्ट्र

आन्दोलन एवं युवा प्रकोष्ठ प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री के.पी. दुबे की मुख्य उपस्थिति में 18 जून के दिन महाराष्ट्र के कार्यकर्त्ताओं की प्रांतीय पर्यावरण संगोष्ठी आयोजित हुई। इसमें श्री दुबे जी ने जहरीली होती हवा, दम तोड़ती नदियाँ, वीरान होते वन, कान फाड़ते शोर जैसी अनेक समस्याओं का विस्तार से वर्णन किया। बढ़ते तापमान की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि आज हम पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में आकर प्रकृति को भूल गये हैं और साधन-सुविधाओं की होड़ में पड़ गये हैं। हम भूल गये हैं कि हम पर्यावरण को नष्ट नहीं कर रहे, बल्कि अपना जीवन ही नष्ट कर रहे हैं।

शांतिकुंज प्रतिनिधि ने कहा कि आज धरती को बुखार आ गया है और उसका एक ही उपचार है कि धरती माता पर हरीतिमा की ठंडी पट्टी रखी जाय। उन्होंने कहा कि यह समस्या हमने ही पैदा

> हम भूल गये हैं कि हम पर्यावरण को नहीं, अपने जीवन को ही नष्ट कर रहे हैं।
>
> • **श्री केदार प्रसाद दुबे, शांतिकुंज**

की है और हम ही उसे ठीक कर सकते हैं, केवल संगठित होने, संकल्प लेने और संवेदना जगाने की आवश्यकता है। हम सबको यह संकल्प लेना चाहिए कि मुझ से जो हो सकता है वह करूँगा, उसमें आलस्य या लापरवाही नहीं करूँगा।

संगोष्ठी में महाराष्ट्र के सभी जिलों के 250 वरिष्ठ कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री सुरेश कापत्तीवार, विदर्भ जोन समन्वयक श्री वासुदेव टेंभरे एवं वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री रूपचंद गोपलानी मंचासीन थे। डॉ. शैलेन्द्र शुक्ला ने कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत की। अंत में श्री संजय काले ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन श्री धनंजय भोयर ने किया।

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस

जनजीवन में योग को प्रतिष्ठित करने के शानदार प्रयास

योग जीवन के समग्र उत्थान के लिए अपनाई जाने वाली एक जीवन शैली है। योगाभ्यासियों को संकीर्ण स्वार्थपरता को छोड़कर अपने भीतर ''सर्वे भवंतु सुखिनः ...'' की भावना का विकास करना होता है। योग साधना में घर, परिवार, समाज में शुचिता, शालीनता, सामंजस्य, सद्भाव, उदार सहकारिता जैसे गुणों के विकास का सतत अभ्यास भी करना होता है। योग से अपनेपन का, आत्मीयता का विस्तार होता है।

पाँचवे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस-21 जून 2019 के दिन अखिल विश्व गायत्री परिवार ने देश-विदेश में हजारों कार्यक्रम आयोजित किए, जिनमें राष्ट्रीय मानकों के अनुसार आसन, प्राणायाम, ध्यान आदि कराये गये। उनसे होने वाले शारीरिक, मानसिक लाभों की संक्षिप्त जानकारियाँ दी गईं। उपरोक्त प्रेरणाओं के साथ सुखी-सतयुगी सामाज के निर्माण के लिए योग को अपनाने का आह्वान किया गया और विधियाँ बताई गईं।

हर शाखा ने गायत्री उपासना को सरल, सहज योग साधना का अनिवार्य अंग बताते हुए हर व्यक्ति को इसे अपनाने तथा राष्ट्र के नवनिर्माण की महान क्रांति में अपना योगदान देने का आह्वान किया। नैष्ठिक परिजनों के अलावा देव संस्कृति विश्वविद्यालय से प्रशिक्षित शिक्षक-विद्यार्थियों की इन कार्यक्रमों के संचालन में सराहनीय भूमिका थी।

प्रस्तुत हैं कुछ स्थानों पर हुए कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारियाँ :

कानपुर में चिकित्सकों के विशिष्ट योगदान से आयोजित हुआ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

गायत्री चेतना केन्द्र, मुरादाबाद (उ.प्र.) पर मनाया गया योग दिवस

देवास की उपजेल में योग करते बंदीगण

बगोदर, गिरिडीह के विद्यालय में

बहराईच के जिला स्तरीय कार्यक्रम में भागीदारी

पूरनपुर, पीलीभीत के विद्यालय प्रांगण में

चिकित्सकों ने की तैयारी, विशिष्ट जनप्रतिनिधियों की भागीदारी

कानपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ कानपुर ने मोतीझील, लेन-1 पर पाँचवा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया। देव संस्कृति विवि. से प्रशिक्षित बोस्की त्रिवेदी, सोनाली, करुणा साहू व अंकिता सिंह ने इसका संचालन किया। विधायक श्री अरुण पाठक, आई.एम.ए. अध्यक्ष डॉ. अर्चना भदौरिया तथा मन्त्री डॉ. बृजेन्द्र शुक्ला, कॉग्रेस अध्यक्ष डॉ. नीलम मिश्रा, माँ गायत्री हॉस्पिटल के डॉ. अमरनाथ सारस्वत व डॉ. संगीता सारस्वत आदि कई चिकित्सा अधिकारी व जन सामान्य ने योग किया। रेडियो सिटी से श्री राघव जी द्वारा इसके लाइव टेलीकास्ट द्वारा दूर के लोगों को भी योग दिवस से जोड़ने का प्रयास किया गया। योगाभ्यासियों को निःशुल्क चिकित्सा सेवा भी उपलब्ध कराई गई।

जिला स्तरीय कार्यक्रम

बहराईच। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बहराईच ने योग दिवस के पहले सात दिवसीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर लगाया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्र श्री दीपक नारायण पाल, जयप्रकाश एवं श्री बच्चालाल ने इसका संचालन किया। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के लिए बड़ी संख्या में प्रशिक्षक तैयार किये गये। उन सभी के सहयोग से 21 जून को सरकारी खेल मैदान में योग दिवस का जिला स्तरीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें डी.एम., एस.पी., एस.डी.एम. सहित हजारों लोगों ने योग किया।

गायत्री योग दर्शन बताया

भुसावल। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार भुसावल द्वारा पाँचवे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर क्रमबद्ध कई कार्यक्रम कराये गये। गायत्री शक्तिपीठ में प्रातः 6 से 7 बजे तक, महिला महाविद्यालय में 7 से 8 बजे तक, नाहाटा महाविद्यालय में 8 से 9 बजे तक, गाडगे बाबा महाविद्यालय में 9 से10 बजे तक तथा संत गाडगे बाबा अभियांत्रिकी महाविद्यालय में 10 से 11 बजे तक योगाभ्यास के कार्यक्रम आयोजित हुए।

भुसावल

सभी कार्यक्रमों में 24 बार सामूहिक गायत्री मन्त्र उच्चारण कराया गया, इसे एक महत्त्वपूर्ण योगसूत्र के रूप में प्रतिपादित किया गया। प्रत्येक में मन्त्रोच्चारण से पूर्व उसका अर्थ भी बताया जाता था। इन पाँचों आयोजनों में श्री डी.के. सोनी व संध्या सोनी, सविता साहू, छबिलाल दास बरहाटे, प्रमोद पाटील, राऊत जी, मधुकर धांडे एवं परिव्राजक श्री. केशव साहू ने सराहनीय योगदान दिया।

राजपथ पर पहुँचे 2000 योगाभ्यासी

दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय कार्यक्रम में पूरे एसीआर के लोगों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। गायत्री परिवार के लगभग 2000 परिजन इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

सुनियोजित प्रयास, बड़ी सफलताएँ

बगोदर, गिरिडीह। झारखण्ड

गायत्री परिवार एवं प्रशासन ने एक साथ मिलकर बगोदर स्टेडियम में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया। इसमें वीडीओ, सीईओ, विधायक व प्रशासनिक अधिकारियों सहित सभी धर्म-सम्प्रदाय के अनुयायिओं एवं बच्चों को मिलाकर हजारों की संख्या में लोगों ने भाग लिया। स्टेडियम में 17 जून से प्रतिदिन योगाभ्यास का क्रम आरंभ कर दिया गया था। इसे सफल बनाने में गायत्री परिवार के सर्वश्री संजीत कुमार, संजय कुमार विभूति, राम कुमार, सूरज गुप्ता, संजय चौरसिया, सुरेश वर्णवाल आदि ने अहम् भूमिका निभाई।

गुरूर, बालोद। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ गुरूर के द्वारा शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक शाला गुरूर के खेल मैदान में योगाभ्यास किया गया। इसमें विधायक श्रीमती संगीता सिन्हा, सरपंच श्री लेखक चतुवेर्दी, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र गुरूर के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. जी. आर. रावटे, मुख्य लिपिक श्री प्रमोद कुमार साहू, गायत्री शक्तिपीठ के वरिष्ठ जन श्री बीएस भटनागर, मनमोहन टुवानी सहित दो सौ से अधिक नागरिकों ने भाग लिया। देसंविवि से प्रशिक्षित सुश्री डिलेश्वरी साहू ने अष्टांग योग का संक्षिप्त परिचय देते हुए योग का अभ्यास कराया। संचालन श्री भोलेश्वर सिन्हा ने किया।

गुरूर

उज्जैन। मध्य प्रदेश

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर नक्षत्र होटल में सामूहिक योगाभ्यास का कार्यक्रम आयोजित हुआ। गायत्री परिवार के योगाचार्य श्री नारायण स्वामी जी ने योगाभ्यास कराया। उन्होंने योग को बीमारियों के निवारण और स्वास्थ्य संवर्धन से ऊपर उठकर व्यक्तित्व के समग्र उत्थान के लिए अपनाने का आह्वान किया। श्री देवेन्द्र श्रीवास्तव के अनुसार इस कार्यक्रम में आरोग्य भारती महानगर, जन शिक्षण संस्थान, द इनिसियेटिव सोसायटी उज्जैन भी शामिल हुए।

सांयकाल माधव कालेज के बास्केटबॉल ऐरिना में, हाटकेश्वर धर्मशाला और एल. पी. जी. बाटलिंग प्लांट में भी सामूहिक योगाभ्यास के कार्यक्रम हुए।

उज्जैन तहसील के बड़नगर, बेरछा, खाचरौद नागदा में भी विशाल कार्यक्रम हुए।

उपजेलों में हुए प्रेरणाप्रद कार्यक्रम

देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार की देवास शाखा ने स्थानीय उपजेल में अधिकारियों एवं बन्दी भाइयों के बीच योग दिवस मनाया। देसंविवि की छात्रा मेघा ठाकुर, निकिता चौधरी तथा स्थानीय कार्यकर्त्ता साधना कुशवाह व धर्मेन्द्र कुशवाह ने योगाभ्यास कराया। सभी को युग साहित्य भी भेंट किया गया। इस अवसर पर जेल अधीक्षक रमेश चन्द आर्य, जेलर लक्ष्मीकांत त्रिपाठी तथा युवा प्रकोष्ठ के प्रमोद निहाले ने सभी को नित्य योग करते हुए शारीरिक-मानसिक उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरति किया।

जतारा। मध्य प्रदेश

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में उपजेल जतारा में भी गायत्री शक्तिपीठ द्वारा योग दिवस का कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया। गायत्री परिवार के श्री काशी प्रसाद सोनी, श्री पी.डी. पटैरिया एवं सहायक जेल अधीक्षक आशीष खरे सहित सभी बन्दी भाइयों ने योगाभ्यास किया।

वृक्षारोपण भी

गंजाम। ओड़िशा

गायत्री शक्तिपीठ बोइरानी में वरिष्ठ परिजन श्री वृन्दावन मिश्र जी के समन्वयन में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। अभ्यासियों ने योग करने के साथ ही वृक्षारोपण भी किया गया।

धमतरी। छत्तीगढ़

गायत्री शक्तिपीठ धमतरी में काफी भाई-बहनों ने योग किया। वरिष्ठ परिजन श्री रामपाल सिंह कौशिक, समन्वयक दिलीप नाग, रीतेश प्रजापति, डॉ. रामचन्द्र मेश्राम आदि परिजनों ने योगाभ्यास से होने वाले लाभों के बारे में जानकारी दी।

कोलकाता। पश्चिम बंगाल

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता ने ईस्टर्न रेलवे के सीनियर इंस्टीट्यूट में योग दिवस मनाया। इसमें रेलवे के उच्च अधिकारियों सहित बड़ी संख्या में लोगों ने योग किया। श्री सच्चिदानंद पांडेय ने कराया। श्री रवि शर्मा, पवन महतो, राजदेव मौर्य, शशिकांत राम, सतीश विश्वकर्मा, शुभम श्रीवास्तव आदि मुख्य रूप से सक्रिय रहे।

विद्यालयों में मना योग दिवस

सुहाबल, अयोध्या। उत्तर प्रदेश

सुहाबल ब्लाक की गायत्री परिवार शाखा के सहयोग से जन समाज विद्यापीठ में योग दिवस मनाया गया, जिसमें विद्यार्थियों सहित 350 लोगों ने योग किया। कार्यक्रम संचालन श्री संजय सिंह एवं श्री शारदा प्रसाद शुक्ला ने किया।

बेलरायाँ, खीरी। उत्तर प्रदेश

बेलरायाँ विद्या मन्दिर परिसर में आयोजित अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में चीनी मिल प्रबन्धक श्री सुशील कुमार गौड़ व मनोज कुमार टण्डन ने भी भाग लिया। गायत्री परिजनों सहित सैकड़ों लोगों ने योग किया। देसंविवि की छात्रा कुमारी शची वर्मा ने इसका संचालन किया।

पूरनपूर। उत्तर प्रदेश

पूरनपुर शाखा ने नगर के सनातन धर्म इंटर कॉलेज में श्री अनंत राम पालिया के निर्देशन में योग दिवस मनाया। सबलपुर के गायत्री विद्या मन्दिर में भी श्री सत्य प्रकाश शुक्ला जी के मार्गदर्शन में योग दिवस मनाया। इनका संचालन सर्वेश कुमार तथा उमाशंकर चौहान ने किया।

जमालपुर। बिहार

माँ भगवती महिला मण्डल, दौलतपुर ने अच्छूराम कन्या मध्य विद्यालय, दरियापुर में योग दिवस मनाया। स्वामी हृदयानन्द सरस्वती के मार्गदर्शन में 150 लोगों ने योग किया। गायत्री परिवार की ओर से श्री मनोज मिश्र एवं नीलम भगत ने योग अभ्यास को तनावमुक्ति का प्रभावशाली माध्यम बताया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य उदयचन्द्र जी, 'सक्षम' के जिला अध्यक्ष भरत किशोर पोद्दार, विश्व हिन्दू परिषद के हेमन्त भगत, श्रीकान्त सज्जू आदि अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार करने वाले नास्तिक नहीं होते, सही मायनों में नास्तिक वे हैं जो ईश्वरीय आदर्शों की अवहेलना करते हैं।

नई शक्तिपीठें, गतिशील हुआ साधना एवं प्रशिक्षण अभियान

पंजाब की प्रांतीय संगोष्ठी

गृहे-गृहे उपासना अभियान को नवगति देंगे

पटियाला। पंजाब

शांतिकुंज के जोन समन्वयक श्री कालीचरण शर्मा जी, प्रांतीय समन्वयक श्री आनंद मिश्रा, श्री इन्दुभूषण की मुख्य उपस्थिति में 23 जून को प्रांतीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई, इसमें सभी जिलों से आये 250 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। तीनों ने क्रमशः गृहे-गृहे गायत्री उपासना, विचार क्रांति अभियान को गति देने की आवश्यकता एवं समयदान की महत्ता को लेकर चर्चा की। श्री कालीचरण शर्मा जी ने कहा कि गायत्री ही पूरे संसार की समस्याओं को सुलझायेगी। पंजाब में महर्षि दयानंद जी एवं महात्मा आनन्द स्वामी ने इन्हीं सूत्रों के माध्यम से पंजाब को आगे बढ़ाया था, हमें परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये गये सूत्रों को अपनाते हुए युगशक्ति का व्यापक विस्तार करना होगा।

इस गोष्ठी में श्री नारायण प्रसाद रानाडे (अमृतसर), श्री अशोक त्रिपाठी (बठिण्डा), श्री रामलखन पाल (मोहाली), श्री सुनील मिश्रा (लुधियाना) ने भी अपने विचार रखे। समूह चर्चा हुई, सक्रियता के निष्कर्ष उभरे। अगली प्रांतीय गोष्ठी आगामी फरवरी माह में बठिण्डा में रखने का निर्णय लिया गया।

गायत्री जयंती पर शक्तिपीठ की प्राण प्रतिष्ठा

दबतोरी के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में मंचासीन गणमान्य (दायें) एवं श्रद्धालु

बिसौली, बदायूँ। उत्तर प्रदेश

बिसौली क्षेत्र के दबतोरी में 11 जून से 13 जून तक नौ कुंडीय यज्ञ एवं प्राण प्रतिष्ठा समारोह सम्पन्न हुआ। 4 गाँवों से कलश यात्रा आरंभ हुई, हजारों बहिनों ने इनमें भाग लिया। कार्यक्रम संचालक श्रीमती शिवम्वदा सिंह की टोली ने गायत्री जयन्ती को गायत्री माता की प्राणप्रतिष्ठा तथा भव्य दीपयज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न कराया। इस कार्यक्रम में 67 दीक्षा संस्कार हुए। उपजोन प्रभारी श्री डी.पी. सिंह, ज्ञानेन्द्र भारद्वाज, विमल, रज्जन लाल, जमना सिंह, छोटे सिंह, चन्द्रपाल अवलेश, धर्मेश आदि ने सक्रिय भूमिका निभाई।

चेतना केन्द्र की प्राण प्रतिष्ठा

22 वर्षों की सक्रियता को नवगति मिली

सहारनपुर। उत्तर प्रदेश

दिनांक 10 से 12 जून की तारीखों में ग्राम खेड़ा युगल में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं नव निर्मित गायत्री मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। टोली ने इस केन्द्र को अधिक से अधिक समर्थ, प्राणवान, सक्रिय और लोककल्याणकारी केन्द्र के रूप में विकसित करने की अपील कार्यकर्त्ताओं से की।

समन्वयक श्री ईश्वर चन्द्र शर्मा ने कहा कि यह केन्द्र सन् 1997 से ही गाँव-गाँव, घर-घर गायत्री चेतना का विस्तार कर रहा है। इसके अब गायत्री चेतना केन्द्र के रूप में स्थापित होने से यह भूमि और भी पावन तथा गरिमामयी हो गई है। चेतना केन्द्र की भूमि ग्राम प्रधान श्री धनपाल सिंह द्वारा दान दी गई है।

इस कार्यक्रम में 40 गाँवों से करीब 1200 श्रद्धालुओं ने भाग लिया। शांतिकुंज के श्री जितेन्द्र मिश्रा की टोली ने कार्यक्रम सम्पन्न कराया। इसमें 12 दीक्षा, 20 विद्यारम्भ एवं दो पुंसवन संस्कार हुए। श्री जयपाल सिंह पाल, श्री रवीन्द्र कुमार शर्मा, श्री धर्म सिंह एवं श्री प्रेम प्रकाश शर्मा रुड़की का विशेष सहयोग रहा।

एक युवा अपने दिव्य चक्षुओं से आलोकित कर रहा है सैकड़ों लोगों का जीवन

सिमरी, बक्सर। बिहार

आम तौर पर व्यक्ति दिव्यांगों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते देखे जाते हैं, लेकिन परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से प्रभावित-अनुप्राणित एक दिव्यांग (सूरदास) युवा पंकज कुमार सैकड़ों लोगों के जीवन को प्रकाशित करने में असाधारण योगदान दे रहा है। चेतना प्रज्ञा मण्डल सिमरी के कार्यवाहक पंकज कुमार ने 5 अगस्त 2018 से गृहे-गृहे यज्ञ अभियान आरंभ किया था, समाचार मिलने तक वह 45वें सप्ताह में अपने अभियान को नियमित रखते हुए उसे निरंतर लोकप्रिय बना रहा है। उनके द्वारा पिछले 60 सप्ताह से हर रविवार को वृक्षारोपण किया जा रहा है। वह सैकड़ों युवाओं को प्रेरित करता है, युगऋषि से जोड़कर उनका उत्साहवर्धन करता है।

एक वर्ष से चल रहे हैं साप्ताहिक कार्यक्रम घर-घर यज्ञ और वृक्षारोपण

2 जून के गृहे-गृहे यज्ञ अभियान की शानदार सफलता के बाद चेतना प्रज्ञा मण्डल ने 17 जून-ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन सामूहिक गंगा आरती का कार्यक्रम आयोजित किया। घर-घर जाकर लोगों को इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए निमंत्रण दिया। 400 लोगों ने इसमें भाग लिया। उन्हें संबोधित करते हुए पंकज कुमार ने लोगों को अपनी जन्मभूमि की गौरव गरिमा की याद दिलाई। बक्सर को ऋषि विश्वामित्र की तपोभूमि बताते हुए अपने देश के संत, ऋषि, महापुरुषों के जीवन के अनुकरण की प्रेरणा दी। इस मण्डल ने हर पूर्णिमा पर गंगा आरती का कार्यक्रम नियमित करने की योजना बनाई है।

लोग पंकज कुमार की श्रद्धा, गुरुनिष्ठा और प्रगतिशील विचारों से बहुत प्रभावित हो रहे हैं। वे टिटागढ़, बैरकपुर, कोलकाता निवासी श्री दिनेश कुमार सिंह का विशेष आभार व्यक्त करते हैं। दिनेश कुमार भी इस तरह के अभियान 2-3 वर्षों से चला रहे हैं, जिनके अनुभव पंकज जी से साझा करते रहते हैं। उन्हीं के पदचिह्नों का अनुसरण करने का बीड़ा सिमरी के पंकज कुमार गुप्ता ने भी उठाया है।

पंकज कुमार (चिह्नित) की टोली द्वारा आयोजित गंगा आरती का कार्यक्रम

गायत्री महामंत्र लेखन साधना का विराट अभियान

अभियान में शामिल हुआ किन्नर (मंगलामुखी) समाज

खलघाट, धार। मध्य प्रदेश

15 जून को गायत्री शक्तिपीठ खलघाट में किन्नर (मंगलामुखी) समाज का एक सम्मेलन हुआ। श्रीमती विनीता खण्डेलवाल ने इसमें रूठी प्रकृति, मिटते-बिखरते समाज की चिंताजनक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए उसके समाधान के लिए गायत्री परिवार द्वारा चलाये जा रहे विराट साधना अभियान की जानकारी दी। मंगलामुखी समाज को भी इसमें शामिल होने के लिए प्रेरित किया गया और उन्हें निःशुल्क मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ भेंट कीं।

कार्यक्रम में किन्नर समाज धरमपुरी-धामनोद की गुरु चंचल मौसी, सेंधवा से अन्नू, किरण दवाना, रुक्क्या मौसी भीकनगांव, काजल चाचरिया, सालू दीदी, आंचल दीदी सहित अन्य कई स्थानों के किन्नर शामिल हुए।

मनावर की किन्नर सोनाली दीदी ने गायत्री परिवार की विश्वकल्याण की भावनाओं का सम्मान करते हुए कहा कि हम आगामी दिनों में हम धरमपुरी में किन्नर समाज का बहुत बड़ा आयोजन करेंगे। इसमें गायत्री यज्ञ, दीपयज्ञ आदि को भी शामिल किया जाएगा।

इस कार्यक्रम का आयोजन गायत्री शक्तिपीठ मनावर, धामनोद, धरमपुरी, खलघाट एवं रेवाआश्रय सोशल वेलफेयर सोसायटी द्वारा संयुक्त रूप से किया।

उज्जैन (मध्य प्रदेश) में हुए प्रयास

उज्जैन के परिजनों ने 23 जून को के. डी. गेट के पास स्थित किन्नर आश्रम में जाकर उन्हें गायत्री मंत्रलेखन साधना में भाग लेने और अधिक से अधिक लोगों को इसके लिए प्रेरित करने का आह्वान किया। वहाँ उज्जैन के अलावा बीकानेर, दलोदा, कपासा, अजमेर, महुआ, ब्यावर, भरतपुर, जोधपुर, दीमाबड़, आबू आदि से आईं मंगलामुखी उपस्थित थीं। उज्जैन की श्रीमती उर्मिला तोमर, डॉ विनय तिवारी, श्री रमेश चंद्र लेवे, श्री एम. एल. रणधबल ने उज्जैन की प्रधान मंगलामुखी कोकिला देवी का सम्मान किया। तत्पश्चात् गायत्री महामंत्र की महत्ता और इस युग में गायत्री साधना की आवश्यकता बताई।

इस से प्रभावित होकर लगभग 20 मंगलामुखियों ने लोगों को गायत्री मंत्रलेखन साधना के लिए प्रेरित करने का आश्वासन दिया। वे ब्याह-शादी, जन्म जैसे शुभ अवसरों पर जहाँ जायेंगी, उस घर-परिवार के लोगों को उज्ज्वल भविष्य के लिए गायत्री महामंत्र लेखन साधना के लिए प्रेरित करेंगी। श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने उन सबसे सहयोग के प्रति गायत्री परिवार की ओर से आभार व्यक्त किया।

मंगलामुखी

किन्नर समाज सदैव दूसरों के मंगल के लिए आशीष देता है। अतः गायत्री परिवार की कुछ शाखाओं ने उन्हें सम्मानजनक सम्बोधन देते हुए उन्हें 'मंगलामुखी' कहना आरंभ किया है।

किन्नरों की बस्ती में गायत्री मंत्रलेखन साधना अभियान को प्रोत्साहन

पावन स्मृति में

पौने चार लाख पुस्तिकाएँ बाँटीं, एक लाख लोग शामिल

श्रीमती विनीता खण्डेलवाल अपने स्वर्गीय श्वसुर श्री रमेशचंद्र खण्डेलवाल की स्मृति में मंत्रलेखन साधना का विराट अभियान चला रही हैं। वे अब तक जेल, नगर परिषद के सफाई कर्मचारी, गर्भवती महिलाओं के बीच जाकर उन्हें गायत्री मंत्र लेखन के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित करती हैं। वे अब तक अपनी ओर से लगभग पौने चार लाख मंत्रलेखन पुस्तिकाएँ निःशुल्क वितरित कर चुकी हैं। एक लाख से अधिक लोगों ने पुस्तिकाएँ लिखकर वापस भी लौटा दी हैं।

स्वच्छता कर्मियों का सम्मान मंत्रलेखन पुस्तिका वितरण

उज्जैन। मध्य प्रदेश

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर गायत्री परिवार उज्जैन ने विश्व कल्याण के लिए गायत्री मंत्रलेखन साधना को प्रोत्साहित किया। इस क्रम में नगर के झोन 4 और 5 के शुचिता सेवकों (स्वच्छता कर्मचारियों) का शहीद पार्क में सम्मान किया गया। उन्हें गायत्री महामंत्र लेखन की महत्ता बताकर मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ प्रदान की गईं। इस कार्य के लिए गायत्री शक्तिपीठ मनावर से श्रीमती विनीता खण्डेलवाल उज्जैन आईं थीं। इस अवसर पर नगर निगम के अधिकारी श्री पुरुषोत्तम दुबे, श्री राजेश बंटी भैया स्वच्छता दरोगा भी उपस्थित थे।

उभरती युवा प्रतिभाओं की गलाई-ढलाई

गायत्री शक्तिपीठ शाहजहाँपुर में प्रशिक्षण लेते कार्यकर्त्ता भाई-बहन

शाहजहाँपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ गौहरपुरा में 13, 14 जून को कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इसमें पुवायां, बरीखास, इमलिया, मधवामई एवं नगर क्षेत्र के सभी युवामण्डल सदस्यों ने भाग लिया। इस शिविर में ज्ञान एवं कौशल विकास-परिष्कार, सफल जीवन की दिशा धारा, सेवा-संयम, यज्ञ विज्ञान, प्रतिभा सुनियोजन जैसे कई विषयों पर प्रशिक्षक श्री सूरज वर्मा एवं श्री विद्याधर मिश्र ने मार्गदर्शन दिया। प्रश्नोत्तरी का क्रम भी चलाया गया।

समापन सत्र में सभी के लिखे अनुभूति पत्र पढ़े गए एवं विदाई दी गई। जिला संयोजिका श्रीमती उर्मिला ठाकुर ने सभी को पाथेय दिया। श्री राजाराम मौर्य व अवधेश कुमार सिंह ने शुभकामनाएँ दीं। व्यवस्था बनाने में रंजीत कुमार वर्मा, दुर्गेश सिंह, सोनपाल, शिवानी, विनीत आदि ने सहयोग किया।

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश

दिनांक 11 जून को मुरादाबाद उपजोन के जिला संभल सरायतरीन में विशाल युवा सम्मेलन आयोजित हुआ। इसमें मुख्य अतिथि श्री भगवान सिंह जी (सेवानिवृत जिला जज) इलाहबाद, विशिष्ट अतिथि श्री पंकज कुमार पाण्डेय अपर पुलिस अधीक्षक और श्री आई. पी. सिंह जिला समन्वयक मुरादाबाद, श्री दयाशंकर गुप्ता, श्री नरेन्द्र वार्ष्णेय सहित बड़ी संख्या में कर्मठ, प्रतिभावान युवाओं ने लाग लिया।

इस शिविर में श्री भगवान सिंह ने श्रेष्ठ राष्ट्र निर्माण के लिए श्रेष्ठ चिन्तन वाले युवाओं की आवश्यकता पर जोर दिया। श्री आई. पी. सिंह ने मिशन द्वारा संचालित व्यसनमुक्ति, वृक्षारोपण, स्वच्छता आदि अभियानों में सहभागिता करने हेतु युवाओं से आह्वान किया।

इस अवसर पर जनपद की कु, आकांक्षा गर्ग को पीसीएस (जे) में चयनित होने पर सम्मानित किया गया।

'SURYA' ने पश्चिम में फैलाया आलोक

नये उल्लास के साथ सेवा की नयी योजनाएँ बनीं, परम्पराएँ बदलीं

न्यूजर्सी, संयुक्त राज्य अमेरिका

गायत्री चेतना केंद्र, न्यूजर्सी से जुड़े युवाओं ने अपने संगठन को SURYA (Spiritual, Uplifting, Revitalizing Youth Association) के नाम से नई पहचान दी है। यह नामकरण अपने आप में युवाओं में नया उत्साह जगा रहा है, उन्हें सूर्य की तरह आलोकित होकर समाज के अंधकार को मिटाने की प्रेरणा दी रहा है।

विगत मार्च-अप्रैल माह तक **सूर्य** संगठन ने नये जोश और उल्लास के साथ कई प्रशंसनीय कार्य किये। फूड बैंक में सहयोग करना, बालगृह में जाकर सहयोग करना, उनके लिए संसाधन एकत्र करना जैसे कार्य उनके द्वारा किए गये। जहाँ भारत में लोग पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध में खोकर अपनी संस्कृति को भूल रहे हैं, वहाँ 'सूर्य' संगठन अमेरिका में बसे भारतीयों के बीच अपनी सनातन संस्कार परम्परा घर-घर प्रतिष्ठित करने के अभियान में जुटा है। जन्मदिवसोत्सव संस्कार को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है, उसके माध्यम से हर भारतीय के घर पहुँचने का प्रयास किया जा रहा है।

पर्व परम्परा बदली : सूर्य संगठन ने होलिका दहन की अलग परम्परा बनाई है। वे पर्व में आये सभी लोगों को एक कागज़ पर अपनी बुराई लिखने और उसे होलिका में रखकर उसे छोड़ने का दृढ़ संकल्प लेने की प्रेरणा देती है। उनका मानना है कि जीवन की बुराइयाँ घटें, अच्छाइयाँ बढ़ें इसी में पर्व मनाने की सार्थकता है।

होलिका दहन में पुराने कपड़े जलाने की परम्परा है, लेकिन **सूर्य** अब पुराने कपड़ों को एकत्रित कर जरूरतमंदो तक पहुँचा रहा है।

सूर्य द्वारा महिला जागृति अभियान चलाया जा रहा है। इसके अंतर्गत देव संस्कृति विश्वविद्यालय की जरूरतमंद छात्राओं की उच्च शिक्षा के लिए सहयोग राशि जुटाई जा रही है। इन युवाओं ने एक माह में ही 1400 डॉलर एकत्रित कर लिए।

पोर्ट ब्लेअर शाखा ने विभिन्न पर्वों पर चलाया जनजागरूकता अभियान

गायत्री जयंती पर महा गंगासागर आरती कार्यक्रम का शुभारंभ करती नगरपालिका अध्यक्ष

नशामुक्ति सप्ताह मनाया

गायत्री परिवार पोर्ट ब्लेअर ने अंतरराष्ट्रीय तंबाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य में नशामुक्ति सप्ताह मनाया, जिसमें वहाँ चल रही बाल संस्कार शाला के बच्चों ने उत्कृष्ट भूमिका निभाई। उनके माध्यम से जगह-जगह नुक्कड़ नाटक आयोजित किए गये।

31 मई को तिरंगा पार्क से जंगलीघाट तक की 6 किलोमीटर की जनजागरण यात्रा निकाली गई। इसमें भाग ले रहे 120 लोगों ने नारे और बैनरों के माध्यम से नशामुक्ति का संदेश दिया। अंत में जंगली घाट पर एक सभा हुई। स्वास्थ्य विभाग के निदेशक श्री एस.पी. वर्मा और चिन्मय मिशन के स्वामी शुद्धानंद आचार्य इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे।

नशामुक्ति सप्ताह के अंतर्गत बाल संस्कार शाला के बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

नशामुक्ति दिवस पर पर सम्मानित किए गये बाल संस्कार शाला के बच्चे

महा गंगा सागर आरती

पोर्ट ब्लेअर शाखा ने गायत्री जयंती-गंगा दशहरा की संध्या पर महा गंगासागर आरती का आयोजन किया। इसमें नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती अनुसूया देव एवं पार्षद श्रीमती सेल्वी भी उपस्थित रहीं। वर्षा होने के बावजूद लोगों ने बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ भाग लिया।

महा आरती से पूर्व श्रद्धालुओं को गायत्री और गंगा के अवतरण का दर्शन समझाया गया। उन्हें जीवन में धारण करते हुए मानव जीवन को सफल बनाने का संदेश दिया गया। युगऋषि के जीवन और शिक्षाओं को बताते हुए उनका अनुसरण करने की प्रेरणा दी गई। केवल अपने लिये नहीं, समाज के लिए जीने, सागर तट एवं घाटों को स्वच्छ रखने का संदेश दिया गया।

योग दिवस

पाँचवा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस बहुउद्देश्यीय हॉल, नाबार्ड कॉलोनी, गोल घर में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य अतिथि ब्रह्मकुमारी बहिन शर्मिष्ठा ने शरीर, मन और आत्मा के उत्कर्ष में योग के योगदान की चर्चा की। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ कार्यकर्त्ता बहिन सत्यवती जी ने विभिन्न आसनों के प्रभाव और लाभ की चर्चा के साथ किया। उन्होंने कहा कि योग जीवन में संतुलन स्थापित करता है, आनन्द बढ़ाता है।

गायत्री पर्व विशाल समारोह एवं अदम्य उत्साह के साथ मनाया गया

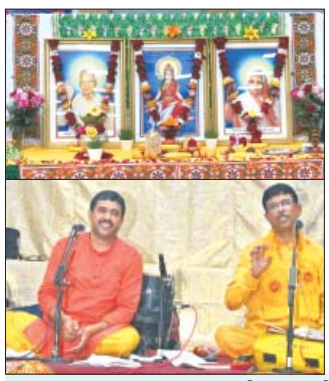

न्यूजर्सी में गायत्री जयंती पर्व मनाते गायत्री परिवार के नैष्ठिक परिजन और श्रद्धालु

न्यूजर्सी, अटलांटिक सिटी। सं.रा. अमेरिका

गायत्री परिवार अटलांटिक सिटी न्यूजर्सी द्वारा पमोना हिंदू मंदिर में 25 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ गायत्री जयंती पर्व मनाया गया। श्री जयेश भाई एवं श्री जतीन भाई ने यज्ञ संचालन किया। श्रद्धेया जीजी, डॉ. साहब द्वारा बताये गये गायत्री एवं यज्ञ के दर्शन तथा दीक्षा अनुबंधों का स्मरण किया गया। सैकड़ों परिजनों ने इसमें भाग लेते हुए सबके लिए सद्बुद्धि, सबके लिए उज्ज्वल भविष्य एवं विश्व कल्याण की कामना के साथ यज्ञाहुतियाँ समर्पित कीं। बलिवैश्व यज्ञ नित्य करने के संकल्प कराये गये। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अनेक लोगों ने अपने धंधे-रोजगार से अवकाश लेकर श्रद्धासिक्त योगदान दिया था।

हरारे। जिम्बाबवे

गायत्री परिवार हरारे ने 2 जून को प्रस्तावित गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान के साथ ही गायत्री जयंती और परम पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस मनाया। युगऋषि के प्रति आस्थावान प्रज्ञा पुत्रों ने इस अवसर पर गायत्री यज्ञ एवं दीपयज्ञ का आयोजन कर अपनी पावन गुरुसत्ता को संकल्प श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने यज्ञ पिता, गायत्री माता के साथ परम पूज्य गुरुदेव के जीवन आदर्शों का विस्तार करने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम ओंकार मंदिर में सम्पन्न हुआ। इसे स्थानीय युगपुरोहित भरतभाई पाठक ने सम्पन्न कराया। दीपयज्ञ में 108 दीप जलाए गये, 35 श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

विदेशों में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन

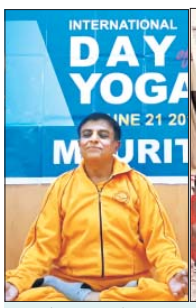

लोंग माउण्टेन, मॉरिशस में योग कराते शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री शांतिलाल पटेल

देव संस्कृति विश्वविद्यालय व अखिल विश्व गायत्री परिवार के योगाचार्यों ने अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर कई देशों में सामूहिक योगाभ्यास कराया।

कनाडा में : ब्राम्पटन सेकेण्ड्री स्कूल, ब्राम्प्टन में विशाल योग शिविर आयोजित हुआ। शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री संदीप कुमार, शिवनारायण प्रसाद, छबिराम गढ़िया व हरिप्रसाद चौधरी की टोली ने इसे सम्पन्न कराया। 200 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। शिविर के संयोजक धर्मजीत भाई थे।

मॉरिशस में : अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा लोंग माउण्टेन के सोशल वेलफेअर सेण्टर में अंतरर्राष्ट्रीय योग दिवस भरपूर उत्साह के साथ मनाया गया। शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री शांतिलाल पटेल एवं नागमणि शर्मा ने गायत्री मंत्र एवं भावभरी प्रार्थना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय प्रारूप के अनुरूप आसन, प्राणायाम, ध्यान आदि कराये। इसके साथ योग का मूल प्रयोजन समझाते हुए गायत्री उपासना को योग-सिद्धि का सार्वभौम आधार बताया।

कार्यक्रम में प्रधानमंत्री कार्यालय के वरिष्ठ सलाहकार मि. जीन फ्रान्गोइस चाउमिएरे ने भी भाग लिया। उन्होंने शांतिकुंज प्रतिनिधियों को अपने कार्यालय में भी आमंत्रित किया और गायत्री परिवार की गतिविधियों को गति देने में पूरे-पूरे सहयोग का आश्वासन भी दिया।

इंग्लैण्ड में सक्रिय पुष्कर राज व रमेश तिवारी की टोली ने तथा फ़ीज़ी की प्रव्रज्या पर पहुँची प्रो. प्रमोद भटनागर की टोली ने योग दिवस के कार्यक्रमों का संचालन किया।

अमेरिका में प्रव्रज्या के लिए रवाना हुए भावसार दम्पति

तीन दशकों से मिशन की सेवा कर रहे श्री राजेश भाई एवं श्रीमती गीता बेन भावसार ह्यूस्टन में परिव्राजक के रूप में सेवाएँ प्रदान करने के लिए 28 जून को रवाना हुए। वे वहाँ छः माह तक अपनी सेवाएँ प्रदान करेंगे।

श्री राजेश भावसार सन् 2014 में गुजरात सरकार में इंजीनियर पद से सेवा निवृत्त हुए। उसके बाद उन्होंने एक वर्ष तक दक्षिण अफ्रीका के जोहानिसबर्ग और छः माह न्यूजर्सी, अमेरिका में परिव्राजक के रूप में सेवाएँ दी हैं। उनके पुत्र ज्वलंत और पुत्रवधु नेहा भी देव संस्कृति विवि. में सेवाएँ दे रहे हैं।

श्री राजेश एवं श्रीमती गीता बेन भावसार श्रद्धेय द्वय से विदाई लेते हुए

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

श्रीमती रुक्मणी आर्या, भोपाल। म.प्र.

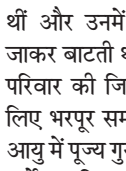

अत्यंत कर्मठ एवं गुरुकार्य के लिए समर्पित वरिष्ठ बहिन श्रीमती रुक्मणी आर्या 15 जून 2019 को 80 वर्ष की आयु में अपनी आराध्य गुरुचेतना में विलीन हो गईं। वे अखण्ड ज्योति पत्रिका की लगभग 800 प्रतियाँ मँगाती थीं और उनमें से 200 स्वयं घर-घर जाकर बाटती थीं। सरकारी नौकरी, घर-परिवार की जिम्मेदारी के साथ गुरुकार्य लिए भरपूर समय निकाला। 18 वर्ष की आयु में पूज्य गुरुदेव से दीक्षा ली और 50 वर्षों तक मिशन की सेवा की।

श्री नाथूलाल पटेल, डुंगरपुर। राज.

राजस्थान पुलिस से सेवानिवृत्त कमाण्डेण्ट एवं प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री नाथूलाल पटेल का 2 जून 2019 को देहावसान हो गया। सेवा निवृत्ति के बाद से वे पूरी तरह से मिशन के लिए समर्पित रहे, जिला संयोजक का दायित्व सँभाला। अपने घर को ही गायत्री चेतना केन्द्र बना दिया और जीवन के अंतिम समय में उसे गायत्री परिवार को समर्पित कर दिया।

श्री बिशन दत्त शर्मा, बुलंदशहर। उ.प्र.

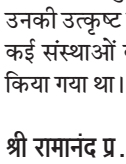

बुलंदशहर शक्तिपीठ से जुड़े वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री बिशन दत्त शर्मा प्रधान जी का 21 जून 2019 को 61 वर्ष की उम्र में आकस्मिक निधन हो गया। वह मिशन में सन् 1994 से ही सक्रिय रहे, हजारों श्रद्धालुओं को मिशन से जोड़ा। उनकी उत्कृष्ट समाज सेवा के लिए उन्हें कई संस्थाओं की ओर से सम्मानित भी किया गया था।

श्री रामानंद प्र. ताँती, जमालपुर। बिहार

सन् 58 में परम पूज्य गुरुदेव से दीक्षा लेने के बाद मिशन की निरंतर सेवा कर रहेजमालपुर के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री रामानंद प्रसाद ताँती का 15 जून को 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके सान्निध्य में कई प्राणवान कार्यकर्त्ता तैयार हुए। उनकी मिशनरी निष्ठा, सांगठनिक सद्भाव, सेवाभाव तो अब स्मृति शेष है, लेकिन उनके सुपुत्र श्री ओमप्रकाश अपने पिता की प्रेरणा से मिशन के लिए भरपूर समयदान कर रहे हैं।

मरते वे हैं जो शरीर सुख एवं इन्द्रिय वासनाओं की पूर्ति के लिए जीवन खपाते हैं। जो लोकमंगल के लिए जीते हैं वे सदा याद किये जाते हैं।

ICCS-2019, Singapore | **देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति ने किया अखिल विश्व गायत्री परिवार का प्रतिनिधित्व**

वैश्विक स्तर पर सद्भाव और सामंजस्य बढ़ाने में युगऋषि के विचारों को शानदार समर्थन मिल रहा है

सिंगापुर।

सिंगापुर में 19 से 21 जून 2019 की तारीखों में आईसीसीएस (इंटरनेशनल कॉन्फरेंस ऑन कोहेसिव सोसायटी) का आयोजन हुआ। इसमें सिंगापुर के राष्ट्रपति और जॉर्डन के महाराजा, प्रिंस गाज़ी, क्राउन प्रिंस जैसे प्रतिष्ठित गणमान्यों ने भाग लिया। इन विशिष्ट नामों में एक नाम युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचार और योजनाओं को वैश्विक स्तर पर विस्तार दे रहे शांतिकुंज-देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का भी था। इस सम्मेलन ने आपसी सद्भाव बढ़ाने में सहयोगी तंत्र विकसित करने की अनेक संभावनाएँ बनाई हैं।

संवेदना जागेगी, तभी सामंजस्य बढ़ेगा

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने विश्व में सामञ्जस्य और सद्भाव बढ़ाने के लिए परम पूज्य गुरुदेव के बताये वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के सहारे लोगों की सोच बदलने पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि लोगों की संवेदनाएँ जगाये बिना, मानवीय गरिमा का बोध कराये बिना समाज में सामंजस्य और सद्भाव की कल्पना नहीं हो सकती। भारतीय संस्कृति में गायत्री उपासना मानवीय संवेदनाओं को जगाने वाला अचूक अस्त्र है। दुनिया को कट्टरता और अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाने में युगऋषि के विचार क्रांतिकारी सिद्ध होंगे।

प्रिंस गाज़ी से मुलाकात

दे.सं.विवि. के प्रतिकुलपति की अनेक गणमान्यों से मुलाकात हुई, लेकिन प्रिंस गाज़ी के साथ हुई मुलाकात अत्यंत आश्चर्यजनक और अतिविशिष्ट थी। दोनों पहले से ही एक-दूसरे से सुपरिचित हैं, बहुत प्रभावित हैं, दोनों के बीच गहरी मित्रता है।

प्रिंस गाज़ी का यह प्रवास अचानक ही निर्धारित हुआ था। दोनों को ही एक-दूसरे के आने की कोई सूचना नहीं थी। जैसे ही प्रिंस गाज़ी ने गायत्री परिवार के प्रतिनिधि को देखा, वे उनकी ओर बढ़े और सारे प्रोटोकॉल और सुरक्षा मानकों को दरकिनार कर उन्हें गले गला लिया।

3000 लोगों ने भाग लिया

आईसीसीएस का उद्घाटन सिंगापुर के राष्ट्रपति और जॉर्डन के महाराजा ने किया। प्रिंस गाज़ी तथा जॉर्डन के क्राउन प्रिंस ने मुख्य संदेश दिया। सिंगापुर के उप प्रधानमंत्री के उद्बोधन के बाद सम्मेलन का समापन हुआ। यह सम्मेलन सिंगापुर के सबसे बड़े सभागार में आयोजित हुआ, जिसके उद्घाटन समारोह में 3000 लोगों ने भाग लिया।

आईसीसीएस-2019 में गणमान्यों के बीच डॉ. पण्ड्या एवं श्री राजकुमार वैष्णव

तरुमित्र योजना से प्रभावित हैं प्रिंस गाज़ी

पर्यावरण संरक्षण के लिए संयुक्त राष्ट्र में प्रस्ताव लाने की तैयारी

प्रिंस गाज़ी और डॉ. चिन्मय पण्ड्या

आईसीसीएस में प्रिंस गाज़ी और डॉ. चिन्मय जी की वार्ता अलग-अलग स्थानों पर हुई, दो घंटे चली। पिछली बार जब दोनों की लंदन में मुलाकात हुई थी, तब गायत्री परिवार की 'तरुपुत्र-तरुमित्र' योजना तथा गायत्री परिवार द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए किये जा रहे कार्यों पर विस्तृत चर्चा हुई थी, जिसका उन्हें स्मरण था।

सिंगापुर की मीटिंग में यह चर्चा आगे बढ़ी। वे कई योजनाओं को वैश्विक स्तर पर क्रियान्वित कराना चाहते हैं, उन्हीं में से एक है परम पूज्य गुरुदेव की 'तरुमित्र' योजना से प्रेरित वृक्षारोपण अभियान। वे इसे यूके, यूरोप, मध्य पूर्व के देशों और भारत में गतिशील करने के लिए उत्साहित हैं।

प्रिंस गाज़ी ने वैश्विक स्तर पर वृक्षारोपण को गति देने का प्रस्ताव प्रिंस चार्ल्स के समक्ष रखा और शांतिकुंज आने का निवेदन भी किया, जिसे उन्होंने तत्काल स्वीकार कर लिया। वे संयुक्त राष्ट्र में एक अंतरर्राष्ट्रीय घोषणा पत्र लाना चाहते हैं, जिससे समस्त पर्यावरण को एक जैविक इकाई घोषित कर दिया जाय। इससे पर्यावरण को नुकसान पहुँचाना किसी के लिए भी संभव नहीं होगा।

वे यह घोषणा पत्र सन् 2020 में संयुक्त राष्ट्र की महासभा में प्रस्तुत करने के इच्छुक हैं। आईसीसीएस में हुई वार्ता में इसका आरंभिक प्रारूप तैयार किया गया। इसे सर्वस्वीकार्य स्वरूप प्रदान करने के लिए आगे का कार्य श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया जीजी के मार्गदर्शन में होगा।

वेदान्त में विद्वान हैं प्रिंस गाज़ी

प्रिंस गाजी एक विद्वान और समर्पित पाठक हैं। उन्होंने शंकराचार्य जी को, सभी उपनिषदों को, विवेक चूड़ामणि जैसे वेदान्त के विख्यात गंथों को गहराई से पढ़ा है। वे अक्सर वेदान्त संबंधी गहन आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक चर्चाओं में भाग लेते रहते हैं। वे एक विख्यात लेखक भी हैं, जिनकी लिखी पुस्तक का पिछले दिनों विज्ञान भवन, दिल्ली में प्रधानमंत्री मोदी जी एवं जॉर्डन के महाराज ने विमोचन किया था। उन्होंने आईसीसीएस में हुई मुलाकात के समय वह पुस्तक डॉ. चिन्मय जी को भेंट की।

प्रिंस गाजी को कई बार नोबल पुरस्कार के लिए नामित किया जा चुका है।

सिंगापुर और मलेशिया में युगचेतना का व्यापक विस्तार

शांतिकुंज के प्रतिनिधियों के सान्निध्य में 21 से 25 जून तक संगोष्ठियाँ, दीपयज्ञ, संस्कार

सिंगापुर में आयोजित आईसीसीएस में भाग लेने के बाद शांतिकुंज की टोली पाँच दिनों तक सिंगापुर और मलेशिया में ही रही। वहाँ कई छोटे-बड़े कार्यक्रम किये। इनके माध्यम से गायत्री, यज्ञ एवं परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के प्रति जो आस्था जागी है, वह अगले दिनों इन दोनों देशों में युगशक्ति गायत्री के विस्तार में बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रमुख कार्यक्रम

सिंगापुर :
- आर्य समाज मंदिर में दीपयज्ञ
- सिंगापुर के मनोनीत सांसद मोहम्मद इरशाद के साथ वार्ता

क्वालालम्पुर, मलेशिया :
- गीता मंदिर में उद्बोधन
- प्रबुद्ध युवाओं की संगोष्ठी

कार्यक्रमों में सैकड़ों की संख्या में नये लोग मिशन से जुड़े, प्रभावित हुए। उनके बीच गायत्री का ज्ञान-विज्ञान, यज्ञ और कर्मफल का विधान, मानवीय उत्कर्ष में आध्यात्मिक जीवन शैली का योगदान जैसे विषयों पर उद्बोधन और चर्चाएँ हुईं। इस संदर्भ में उन्हें बेझिझक अपनी शंका एवं जिज्ञासाएँ प्रस्तुत करने का अवसर मिला। उनके समाधान के साथ जीवन को नई दिशा मिली। इन पाँच दिनों में सभ्यता और चकाचौंध की होड़ में बहती-भटकती दुनिया को यथार्थता का बोध करने और अपनी सनातन संस्कृति के प्रति आस्था बढ़ाने का अमूल्य अवसर मिला।

सिंगापुर में : बायें आर्य समाज मंदिर में दीपयज्ञ और दायें घर-घर देवस्थापना करने पहुँचे शांतिकुंज प्रतिनिधि

सिंगापुर में 21 जून को श्रीमती शांता माहेश्वरी के घर प्रथम गोष्ठी एवं दीपयज्ञ का आयोजन हुआ। सभी प्रतिभागीगण आत्मोत्कर्ष के लिए नियमित गायत्री उपासना करने के लिए उत्साहित हुए।

21 एवं 22 जून को 30-35 घरों में देवस्थापनाएँ हुईं। शांतिकुंज प्रतिनिधि देवस्थापनाएँ कराने घर-घर

मलेशिया के समाचार अगले अंक में पढ़ें

गये। देवस्थापना कराने वालों में श्रीमती पद्मा-मनोज मेहता, श्रीमती विद्याजी, श्री सुमित कुमार सिन्हा, श्रीमती किंजल एवं श्री प्रजापति, श्रीमती छाया एवं श्री प्रभात राणा, श्रीमती विनीता कुमारी एवं श्री रवि कुमार, श्रीमती नमिता एवं श्री अजय पाटीदार आदि प्रमुख थे।

22 जून को आर्य समाज मंदिर में आयोजित दीपयज्ञ एवं गायत्री महाविज्ञान पर उद्बोधन हुआ। इसमें सनातन धर्म के प्रति आस्थावान सैकड़ों अनुयायी उपस्थित थे।

प्रमुख कार्यकर्त्ता स्नेहा जयेश सुथार के अनुसार 22 जून को मनोनीत सांसद माननीय मोहम्मद इरशाद के साथ हुई डॉ. चिन्मय जी की वार्ता भी मिशन को गति देने में बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी। सिंगापुर में रह रहे शांतिकुंज के स्वयंसेवी कार्यकर्त्ता श्री भास्कर सिन्हा के सुपुत्र श्री सुमित सिन्हा ने भी समग्र प्रवास की व्यवस्थाओं में शानदार सहयोग प्रदान किया।

सिंगापुर के चांगी एअरपोर्ट पर शांतिकुंज प्रतिनिधियों का स्वागत

गैस ऑथोरिटी ऑफ इंडिया (गेल), नोएडा के वैज्ञानिक-अधिकारियों के बीच उद्बोधन

गेल (गैस ऑथोरिटी ऑफ इंडिया लि.) ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, नोएडा ने 6 जून 2019 को अपना 23वाँ स्थापना दिवस मनाया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी इस अवसर पर विशेष रूप से आमंत्रित थे। उन्होंने गेल के कार्यकारी निदेशक श्री एस.पी. गर्ग (एचएसई एवं टीक्यूएम), चार बोर्ड के निदेशक, अधिशासी निदेशक आदि अनेक गणमान्यों की उपस्थिति में प्रतिष्ठान के लगभग 200 अधिकारी वैज्ञानिकों को संबोधित किया।

डॉ. चिन्मय जी ने देश और समाज की प्रगति में मानवीय उत्कर्ष की आवश्यकता और भूमिका पर उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति में अपार संभावनाएँ विद्यमान हैं।

अध्यात्म अंतर्निहित संभावनाओं को तलाशने व निखारने का विज्ञान है।
• डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

उन्हें जितना साकार किया जा सके और उनका सदुपयोग किया जा सके, उसी अनुपात में परिवार, संस्था या राष्ट्र प्रगति करते हैं। अध्यात्म वह जीवन शैली है जिसमें व्यक्ति अपनी क्षमताओं को विकसित करने, उनका सबके हित में उपयोग करने तथा संगठित होकर कार्य करने की प्रेरणा देती है।

शांतिकुंज प्रतिनिधि ने सभा के अन्त में मंचासीन गणमान्यों को युगसाहित्य भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर गायत्री चेतना केन्द्र, नोएडा के व्यवस्थापक श्री आरएन सिंह, शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री रामअवतार पाटीदार, गुप्ता जी, शास्त्री जी, गांगुली जी, गर्ग जी आदि उपस्थित रहे।

डॉ. चिन्मय जी गेल के अधिकारियों को संबोधित करते हुए

शहीद सपूत संदीप यादव को श्रद्धांजलि

देवास। मध्य प्रदेश

देवास शाखा ने देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर सपूत शहीद श्री संदीप यादव को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए 8 जून को एक सभा का आयोजन किया। इसमें उनकी आत्मा की शांति-सद्गति और परिवार को इस आघात को सहने की शक्ति मिले, ऐसी प्रार्थना की गई।

अमर शहीद सन्दीप

स्व. संदीप के पिता को आर्थिक सहायता एवं युग साहित्य भी भेंट किया गया। सुश्री दुर्गा दीदी अपने एक माह का मानदेय संदीप के परिवार को दिया। इसके अलावा भोरांसा के रामकिशन बजाज ने भी प्रज्ञापीठ भोरंसा की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि सभा का संचालन महेश आचार्य ने किया।

वाणी से नहीं, व्यक्तित्व से दिया गया उपदेश प्रभावशाली होता है, परिवर्तन का आधार बनता है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस | शांतिकुंज के मंच से दिया गया योग संदेश

योग दुःखनाशक है, उसे अपना मित्र बना लो

पाँचवे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर शांतिकुंज में विशाल कार्यक्रम आयोजित हुआ। मंच पर उपस्थित श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं अनेक वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति में सैकड़ों लोगों ने युगऋषि की मान्यताओं और राष्ट्रीय मानकों का शानदार समावेश करते हुए योग किया। इस समारोह को सम्बोधित करते हुए श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने गीता के छठे अध्याय के 17वें श्लोक-''**युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।** ...'' का उद्धरण करते हुए कहा, ''योग दुःखनाशक है।''

योग को मित्र बना लो

''अंतरराष्ट्रीय योग दिवस जीवन जीने की कला सीखने का संदेश लेकर आता है। आज के दिन सभी दुःखनाशक योग को जीवन में नियमित रूप से अपनाने का संकल्प लें, उसे व्यवस्थित बना लें। दीर्घ, निरोगी जीवन चाहते हो तो योग को अपना मित्र बना लो।'' • **श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी**

योगाभ्यास में शांतिकुंज के अंतेवासी भाई-बहिन, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय परिवार, स्काउट-गाइड से जुड़े एवं गायत्री विद्यापीठ के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

शांतिकुंज में मनाये गये पाँचवे अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस में शामिल योगाभ्यासी

कार्यक्रम का शुभारंभ गायत्री महामंत्र और मन-भावनाओं को अंतर्मुखी एवं एकाग्र करने वाले सुमधुर संगीत से हुआ। तत्पश्चात अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के मानकों पर आधारित योगासन एवं प्राणायाम कराये गये। देसंविवि के उपाचार्य श्री विनय शर्मा ने प्रत्येक आसान-प्राणायाम के लाभ की भी चर्चा की। इस क्रम में प्रज्ञायोग को प्रमुखता से शामिल किया गया था। मंच पर व्यवस्थापक श्री शिवप्रसाद मिश्र, श्री वीरेश्वर उपाध्याय, श्री केसरी कपिल, डॉ. ओपी शर्मा, डॉ. बृजमोहन गौड़, श्री कालीचरण शर्मा, डॉ. गायत्री शर्मा आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

देसंविवि समाचार | हिन्दी साहित्य सम्मेलन में आठ प्रांतों की भागीदारी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में 7 एवं 8 जून को 'साहित्य व समाज का अंतः संबंध' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। यह संगोष्ठी केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित हुई। इसमें आठ प्रांतों एवं उत्तराखंड के 11 जिलों के प्रतिभागियों ने भाग लिया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए देसंविवि के कुलपति श्री शरद पारधी जी ने साहित्य को समाज का प्रकाश स्तंभ बताया। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति की उत्कृष्टता में संत, शहीद, सुधारकों के साहित्य का गहरा प्रभाव है। उन्होंने कहा कि युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा लिखा गया साहित्य समाज में एक महान क्रांति को जन्म दे रहा है।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की सहायक निदेशिका सुश्री अंजू सिंह ने अपने निदेशालय की गतिविधियों से अवगत कराया। देसंविवि के स्कूल ऑफ इण्डोलॉजी के प्रो. सुरेश वर्णवाल, स्कूल ऑफ इन्फॉर्मेशन एण्ड टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. अभय सक्सेना, भारतीय भाषा संकाय के अध्यक्ष प्रो.राधेश्याम चतुर्वेदी ने चर्चा में हिस्सा लेते हुए हिन्दी साहित्य की उत्कृष्टताओं से अवगत कराया।

हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम सामज को उत्कृष्ट साहित्य के सृजन के लिए प्रेरित करते हैं और समाज को दिशा दिखाते हैं। अगले सत्रों में वर्धा के डॉ. अवधेश शुक्ल, दिल्ली के डॉ. रमेश तिवारी, डॉ. पवन विजय, डॉ. सुधाकर पाठक, काशीपुर के डॉ. सुभाषचंद्र कुशवाहा, बनारस के डॉ. देवेन्द्र सिंह, देसंविवि के प्रो. सुखनंदन सिंह, स्मिता वशिष्ठ, रुड़की के डॉ. सुशील उपाध्याय, देवप्रयाग के डॉ. वीरेन्द्र सिंह बर्त्वाल आदि अनेक गणमान्यों ने अपने विचारों को साझा किया।

> युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा लिखा गया साहित्य समाज में एक महान क्रांति को जन्म दे रहा है।
> • श्री शरद पारधी, कुलपति, देसंविवि.

देसंविवि में हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में दायें-मंचासीन गणमान्य एवं बायें-प्रतिभागीगण

परम पूज्य गुरुदेव के प्रति अनन्य आस्था रखने वाले

संत शिरोमणि स्वामी सत्यमित्रानंद जी को शांतिकुंज परिवार की भावभरी श्रद्धांजलि

परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के प्रति अनन्य आस्था रखने वाले सन्यासी संत, भारतमाता मंदिर के संस्थापक, निवृत्त शंकराचार्य पद्मभूषण स्वामी सत्यमित्रानंद जी का 25 जून को देवलोक गमन हो गया। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया जीजी एवं समस्त शांतिकुंज परिवार ने उन्हें भावभरी श्रद्धांजलि दी। श्रद्धेय डॉ. साहब एवं अनेक वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने उनके समाधि अर्पण समारोह में पहुँचकर अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किये।

श्रद्धेय डॉ. साहब ने कहा कि सम्पूर्ण भारतवर्ष के श्रेष्ठ सन्यासियों में स्वामी सत्यमित्रानंद जी की गणना की जाती है। परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी उनका बड़ा सम्मान करते थे। समय-समय पर उनका मार्गदर्शन मिलता रहा है। कुछ ही दिनों पूर्व मेरी पूज्य स्वामी जी से मुलाकात हुई थी, तब उन्होंने कहा था कि भारत को जगद्गुरु बनाने के लिए घर-घर गायत्री को पहुँचाना आवश्यक है। हम सब उनकी इस शुभेच्छा को पूरा करने के लिए अपना शत-प्रतिशत योगदान देंगे।

स्वामी सत्यमित्रानंद जी को पुष्पांजलि अर्पित करते श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

परम पूज्य गुरुदेव और स्वामी सत्यमित्रानंद

सुरभित स्मृतियाँ

प्रथम मुलाकात, बड़ा आशीर्वाद

स्वामी सत्यमित्रानंद जी बताते हैं-

''मैं सन् 1957 में हरिद्वार-ऋषिकेश के बीच आईडीपीएल में अनेक संतों के बीच अपनी कुटिया में साधना करता था। एक दिन पता चला कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी उस क्षेत्र में आ रहे हैं। मैंने उनका साहित्य पढ़ा था, उनके विषय में जानकारी थी। समाचार सुनकर मैं भी मिलने के लिए उत्साही हुआ। उनकी सादगी से बड़ा प्रभावित हुआ। मैंने उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने मुझ से कहा कि तुम्हारे अंदर साधना के बीज हैं। समय आने पर बड़े अवसर मिलेंगे।

सन् 1960 में मेरी शंकराचार्य के पद पर नियुक्ति हुई। तब से आचार्य जी के प्रति मेरी आस्था और प्रगाढ़ हो गयी। मात्र 5 मिनट की मुलाकात में उनसे मिला आशीर्वाद फलित होते मैंने देखा।''

दीर्घ जीवन का आशीर्वाद

एक बार हृदय चिकित्सा के लिए लंदन जाने से पहले स्वामी सत्यमित्रानंद जी परम पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद लेने शांतिकुंज आये। पूज्य गुरुदेव ने उनसे कहा था, ''स्वामी जी, अभी देश को, राष्ट्र को, समाज को, धर्म को, संस्कृति को आपकी बहुत आवश्यकता है, इसलिए हम आपको पूर्ण विश्वास दिलाते हैं कि आप वहाँ से स्वस्थ होकर लौटेंगे। हम अपना जप-तप आपके स्वास्थ्य के लिए समर्पित करते हैं।''

देसंविवि का शिलान्यास

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की नींव का पहला पत्थर स्वामी जी के वरद हस्तों से रखा गया। इस अवसर पर अपनी गुरुपूर्णिमा पर मिलने वाली गुरुदक्षिणा से सवा लाख रुपये का प्रथम अनुदान यह कहते हुए देव संस्कृति विश्वविद्यालय को भेंट किया कि मैं भी तो परम पूज्य गुरुदेव के शिष्यों में से एक हूँ।

अनन्य आस्था

स्वामी जी ने एक बार कहा था, ''मैं विश्व में अनेक संत-महात्माओं से मिला, सबके प्रति मेरे हृदय में सम्मान है, लेकिन दो ही के प्रति मेरे हृदय में अनन्य श्रद्धा है, एक तो आरएसएस के गुरु गोलवलकर जी महाराज और दूसरे पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी महाराज, जो अवतारी पुरुष के रूप में इस धरती पर आये हैं, जिन्होंने सामान्य व्यक्ति को भी अपना बनाकर ज्ञान प्रदान किया है।

गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हुए शांतिकुंज के कार्यकर्त्ताओं को श्रद्धांजलि

श्रीमती पद्मावती राव

शांतिकुंज में सन् 1989 से सेवाएँ प्रदान कर रहीं बहिन श्रीमती पद्मावती राव का 14 जून 2019 को स्वर्गवास हो गया। परम वंदनीया माताजी के विशेष अनुग्रह-आशीर्वाद से वे अपने तीन बच्चों-अमर, अनिल और माधवी के साथ शांतिकुंज आ गई थीं। उन्होंने यहाँ स्वावलम्बन विभाग में तथा तेलुगु भाषा में पत्राचार व मार्गदर्शन के कार्य में अपनी सेवाएँ दीं।

श्री भूरा उपराले

शांतिकुंज के बागवानी विभाग में सेवाएँ प्रदान कर रहे श्री भूरा उपराले का 12 जून 2019 को स्वर्गवास हो गया। वे 72 वर्ष के थे। उन्होंने सन् 1995 में अपना जीवन शांतिकुंज को समर्पित कर दिया और तब से ही साहित्य विक्रय, बागवानी आदि कई विभागों में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। उनके भाई श्री कुंवरलाल भी शांतिकुंज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता हैं।

श्रीमती सुजान बाई

शान्तिकुंज के समर्पित कार्यकर्त्ता स्व. श्री मूलसिंह ठाकुर जी की भाभी थी। उनके पति स्व. श्री गुलजार सिंह ठाकुर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। श्रीमती सुजानबाई लगभग 35 वर्षों से ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान में निवास कर रही थी। दिनांक 21 जून योग दिवस के दिन लगभग 104 वर्ष की आयु में ग्राम तोरड़िया, तहसील हरसुद, जिला खण्डवा में उनका देहावसान हुआ।

''यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा कोई विरोध न करे, तो मन को हमेशा शान्त रखो और हृदय में पवित्र विचारों को स्थान दो।''

• **स्वामी रामतीर्थ**

''कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता। बुद्धिमान वह है, जो प्रत्येक कार्य को अपनी रुचि के कार्य में परिणत कर सकता है।''

• **स्वामी विवेकानन्द**

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुंज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा अंबिका प्रिंटर्स एण्ड बाइंडर्स, 656क देहराखास, पटेल नगर, इंडस्ट्रिअल एरिया, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय।
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866
संपर्क सूत्र :- फोन-9258369725 (प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक) email : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार संपादन : news.shantikunj@gmail.com

Publication date: 12.07.2019
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 80
Postel R.No.
UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2018-20